डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 318 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | मंगलवार 03 सितम्बर 2024 | मूल्य 2 रुपया

आवश्यकता है

दैनिक गुरु एक्सप्रेस

आफिस में कार्य करने हेतु युवक की आवश्यकता है।

वेतन योग्यता अनुसार

संपर्क

संपर्क समय- शाम 4 से 6 बजे तक

कार्यालय दैनिक गुरु एक्सप्रेस

9425105928. 8319964648

प्रकृति से खिलवाड़ का असर बिजली पर

गर्मी ने बढ़ाई बिजली की डिमांड, अभी भी एसी की जरूरत

मंदसौर में चार माह में 61 करोड़ यूनिट बिजली सप्लाय

मंदसौर, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। प्रकृति से खिलवाड़ का असर खंड वर्षा, अवर्षा, जलस्तर में गिरावट के रूप में सामने आ रहा है। इसके साथ ही पहले जहां जुलाई में बारिश के रंग में आने के बाद एसी की पूर्ति पंखे कर देते थे। वहीं अब घरों में दिन के साथ रात में भी एसी चल रहे हैं। यहीं कारण है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस बार वित्तीय वर्ष के चार माह में बिजली की डिमांड आठ प्रतिशत बढ़ी है। मंदसौर की बात करें तो चार माह में 61 करोड़ यूनिट बिजली की खपत हुई है। संभाग में बिजली खपत के मामले में सबसे आगे उज्जैन है। वहीं नीमच से ज्यादा बिजली खपत मंदसौर में हुई है।

बिजली की डिमांड में पिछले साल की तुलना में इजाफा हुआ है और डिमांड 8 फीसदी तक बढ़ी है। मंदसौर के साथ ही रतलाम और नीमच तीनो ही जिलों में बिजली की डिमांड ज्यादा रही है। इधर बिजली कंपनी भी अच्छी डिमांड को देखते हुए सप्लाई में जुटी हुई है, ताकि सप्लाई में कोई दिक्कत ना आए। इन तीनों जिले में इस वित्तीय वर्ष यानी एक अप्रैल से 25 अगस्त तक 167 करोड़ यूनिट बिजली की डिमांड रही है। यह पिछले साल से ज्यादा है। इसमें रतलाम में 67 करोड, मंदसौर में 61 करोड और नीमच में 39 करोड यूनिट बिजली की सप्लाई हुई है। पिछले साल इस दौरान 154 करोड यूनिट बिजली की सप्लाई हुई थी। अच्छी बारिश के बावजूद अभी भी बिजली की डिमांड अच्छी बनी हुई है। बिजली डिमांड के मामले में उज्जैन संभाग में रतलाम तीसरे नंबर पर है। 112 करोड़ यूनिट के साथ उज्जैन पहले नंबर पर और 99 करोड यूनिट के साथ देवास दूसरे नंबर पर है।

कंपनी क्षेत्र में भी बढ़ी डिमांड...

इधर कंपनी क्षेत्र में भी डिमांड बढ गई है। इस वित्तीय वर्ष में 1208 करोड यूनिट बिजली की सप्लाई हुई है। इसमें इंदौर में 270 करोड यूनिट, धार में 210 करोड यूनिट, खरगोन में 110 करोड यूनिट, उज्जैन में 112 करोड यूनिट, देवास में 99 करोड यूनिट की सप्लाई हुई है। कंपनी क्षेत्र के अन्य जिलों में 25 करोड यूनिट से 61 करोड यूनिट बिजली वितरण हुआ है।

बिजली की ट्रिपिंग भी लगातार जारी...

बिजली की डिमांड भले ही बढ रही है। लेकिन, ट्रिपिंग पर फिर भी रोक नहीं लग पा रही है। बारिश के साथ ही शहर के कई क्षेत्रों में बिजली की ट्रिपिंग हुई और लोगों को परेशान होना पड़ रहा है।। बिजली कभी भी ट्रिप हो जाती है। मेंटेनेंस के बावजूद यह समस्या रुक नहीं रही है।

यूपी की तर्ज पर एमपी में आधार से होगा पुलिस भर्ती में...

ऑनलाइन वेरिफिकेशन

भोपाल, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश में अब उत्तर प्रदेश की तर्ज पर पुलिस भर्ती में अभ्यर्थियों का सत्यापन आधार के माध्यम से किया जाएगा। इसकी शुरूआत इसी वर्ष से पांच हजार पुलिस कर्मियों की भर्ती में चयनित हुए अभ्यर्थियों के सत्यापन से की जाएगी। यूपी में यह व्यवस्था पहले से हैं।

दरअसल, उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती का पेपर लीक होने, अन्य व्यक्ति द्वारा परीक्षा देने आदि घटनाओं की रोकथाम के लिए आधार सत्यापन की प्रक्रिया अपनाई गई। इससे भर्ती प्रक्रिया में कोई गड़बड़ी सामने नहीं आई है, इसलिए अब मप्र में भी यही प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

गृह विभाग ने जारी कर दी अधिसूचना...

वहीं, भारत सरकार ने सभी राज्यों को आधार से भर्ती प्रक्रिया में सत्यापन की व्यवस्था लागू करने दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिसके बाद मध्य प्रदेश में भर्ती प्रक्रिया में इस व्यवस्था को लागू करने के लिए गृह विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है। बता दें कि प्रशिक्षु आईएएस पूजा खेड़कर के चयन में सामने आई गड़बड़ी के बाद केंद्र सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) में पंजीकरण, परीक्षाओं और भर्ती के विभिन्न चरणों के दौरान स्वैच्छिक आधार पर उम्मीदवारों की पहचान सत्यापित करने आधार से प्रमाणीकरण की व्यवस्था लागू कर दी।

ऐसी होगी व्यवस्था...

एमपी में गैर राजपत्रित पदों पर व्यापम (कर्मचारी चयन मंडल) द्वारा भर्ती परीक्षा आयोजित की जाती है। इसके बाद संबंधित विभाग चयनित अभ्यर्थी का सत्यापन कर उनके भर्ती संबंधी दस्तावेजों का मैन्युअली जांच करता है। नई व्यवस्था होने से भर्ती परीक्षा में अभ्यर्थी आधार तो सत्यापन होगा ही साथ ही चयन के बाद अभ्यर्थी का आधार से सत्यापन किया जाएगा। इससे गडबडी की आशंका नहीं होगी।

वन विभाग की भर्ती प्रक्रिया में नहीं आधार सत्यापन की व्यवस्था...

मध्य प्रदेश में गृह विभाग ने पुलिस भर्ती परीक्षा में आधार सत्यापन की व्यवस्था लागू की है, लेकिन वन विभाग की भर्ती प्रक्रिया में यह व्यवस्था नहीं है। हालांकि अब वन सहित अन्य विभागों में भी गैर राजपत्रित पदों पर भर्ती किए जाने वाले पदों पर आधार सत्यापन की व्यवस्था लागू करने की तैयारी है।

मारवाड़ियों और किसानों में विवाद, 8 घायल

खेत में भेड़ चराने से रोका तो मारपीट शुरु कर दी

नीमच, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के बघाना थाना क्षेत्र के मध्यप्रदेश- राजस्थान सीमा पर स्थित गांव सेमार्डा में रविवार रात राजस्थान से आए मारवाड़ी भेड़ पालकों और सेमार्डा गांव के किसानों के बीच जमकर विवाद हो गया। जब कुछ और ग्रामीण समझाइश के लिए गए, तो दोनों ही पक्षों में जमकर मारपीट हो गई। इस मारपीट मे दोनों पक्षों के कुल आठ लोग घायल हो गए। जिनका उपचार नीमच के बड़े अस्पताल में चल रहा है। घटना की जानकारी मिलते ही बघाना थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची।

घटना रविवार रात की बताई जा रही है, जब जिले व राज्य के सीमावर्ती गांव सेमार्डा में राजस्थान के पाली जिले के मारवाड़ी भेड़ पालक अपनी भेड़ लेकर निकल रहे थे। इसी दौरान खेत में भेड़ घुसने की बात पर किसानों और भेड़ पालकों में कुछ कहा सुनी हुई। किसान कारुलाल मीणा का आरोप है कि उसके खेत में भेड घुस गए, जिस पर वह भेड़ बाहर निकालने गया। तो भेड़ पालकों ने उस पर हमला कर गंभीर घायल कर दिया। जिस पर उसने ग्रामीणों को मदद और समझाइश के लिए बुलाया। मगर भेड़ पालकों ने उन पर भी जानलेवा हमला कर दिया।

वहीं भेड़ पालकों का आरोप है कि हम निकल रहे थे। इसी दौरान प्रताप सिंह और उनके साथी आए और फ्री में भेड़ उन्हें देने की बात करने लगे और मना करने पर भेड़ अपने वाहन में डालकर ले जाने लगे। रोकने पर उन पर जानलेवा हमला कर दिया। जिसमें उनके तीन लोग घायल हो गए। फिलहाल घायलों का बड़े अस्पताल में इलाज जारी है। बघाना पुलिस घायलों के बयान लेकर आगे की कार्रवाई कर रही है। घटना की जानकारी मिलते ही नीमच विधायक दिलीप सिंह परिहार बड़े अस्पताल पहुंचे और घायल सेमार्डा के ग्रामीणों और किसानों का हालचाल जाना।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार कारुलाल पिता पृथ्वीराज मीणा उम्र 55 साल, प्रताप सिंह पिता केसर सिंह रावत उम्र 60 वर्ष, विजय सिंह पिता केसर सिंह रावत उम्र 55 वर्ष, रविन्द्र सिंह पिता प्रताप सिंह रावत उम्र 32 वर्ष, गोविंद पिता माधुसिंह रावत उम्र 55 वर्ष निवासी सेमार्डा और भेड़ पालक सवाराम पिता भुरा रबारी उम्र 60 वर्ष, परागा राम पिता जोगाराम रबारी उम्र 32 वर्ष, छोताराम पिता देवाराम रबारी उम्र 35 वर्ष घायल हुए है।

बगैर परमिट शहर में घुस रही बसे, परिवहन विभाग सुस्त

मंदसौर, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। जिले में परिवहन विभाग का बसों के संचालन पर नियंत्रण है ही नहीं। टूरिस्ट परमिट व अन्य परमिट की नान स्टाप बसें भी धड़ल्ले से शहर में घुस रही है और सभी मुख्य मार्गों पर खड़ी रहकर यातायात बाधित कर रही है। जबकि, उनको बायपास से ही निकलना चाहिए। इसके अलावा कुछ बसें तो बिना परमिट ही चल रही है। जगह-जगह बुकिंग स्टाल खुल गए है और बसों में सवारियां कम और सामान ज्यादा अपलोड हो रहा है। परिवहन विभाग की मिलीभगत से सड़को पर दौड रही बसों को रोकने के लिए कोई उपाय नहीं किए जा रहे हैं। जबकि, थोड़े-थोड़े समय के अंतराल में चल रही बसों के चालक भी समय कवर करने के चक्कर में शहर के अंदर भी तेज गति से बसे चला रहे हैं।

शहर की सड़को पर अवैध परिवहन काफी तेजी से पनप रहा है। कुछ बस मालिक एक दो बस का परमिट लेकर ज्यादा बसे चला रहे हैं। टूरिस्ट परमिट के नाम पर चल रही बसों को जहां से चल रही है, वहां के बाद सीधे गंतव्य पर रुकना चाहिए। पर नीमच, भीलवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर, जयपुर तरफ से लगातार आने वाली बसें हर छोटे-बड़े स्टाप पर रुक रही है और शहर की प्रमुख सडक़ों पर बने बुकिंग सेंटर पर खड़ी रहती हैं। इनको माल लोडिंग-अनलोडिंग की भी अनुमति नहीं है। इसके बाद भी बसों में सवारी से ज्यादा सामान भरकर लाया जा रहा है। सामान उतारने व चढ़ाने के चक्कर में आधे से एक घंटे तक सड़क पर यातायात बाधित भी होता रहता है। अधिकांश बस संचालकों के पास बसे खड़ी करने की भी जगह नहीं है। फिर भी वह निजी बसे चला रहे हैं और सड़को पर या अन्य सरकारी जमीन पर सामान उतारने या चढ़ाने में उपयोग कर रहे हैं।

सवारी से ज्यादा होता है माल लदान, छत बन जाती है ट्रांसपोर्ट

परमिट एक बस का चल रही कई बसें...

नीमच, मंदसौर से इंदौर-उज्जैन के लिए दिन भर में 30 से अधिक बसें चल रही हैं। परिवहन विभाग के सूत्रों की माने तो इनमें से महज 10-12 बसों का ही परमिट हैं। इधर सुबह से रात तक टूरिस्ट परमिट के नाम पर चलने वाली बसे महू-नीमच राजमार्ग पर जगह-जगह बने बुकिंग सेंटर के आस-पास खडी ही रहती है। शाम होने के बाद से इनके आने की संख्यो भी बढ जाती है। जबकि, इनको परमिट जहां से प्रारंभ होती है वहां से सीधे गंतव्य तक जाने का ही मिलता है। इसके बाद भी रास्ते में जगह-जगह सवारी तो बैठाते उतारते ही है, सामान भी उतारते-चढाते रहते हैं। इन सभी बसों के मंदसौर शहर में प्रवेश की अनुमति भी नहीं है। पर सभी बसे शहर में आ रही हैं।

अन्य स्टेट की बसें चल रही जिले में...

जिले में कई बस मालिक तो ऐसे भी है जो परमिट वाली बस की जगह दूसरे राज्यों में पंजीकृत बसे चला रहे हैं। शिकायत के बाद भी परिवहन विभाग में कोई सुनवाई नहीं हो रही है। मंदसौर जिले में राजस्थान, गुजरात में पंजीकृत बसे भी चल रही है। पर जिस दिन जांच करना होती है, उस दिन पहले ही बस मालिक को सूचना कर दी जाती है। तो वह बस ही नहीं चलाते हैं।

18 से शुरु होगी त्रैमासिक परीक्षाएं

मंदसौर, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। लोक शिक्षण संचालनालय ने 9वींसे 12वीं तक की त्रैमासिक परीक्षाओं का शेड्यूल जारी कर दिया है। 18 सितंबर से परीक्षाओं की शुरुआत होगी।

नौवीं और दसवीं की परीक्षा हिंदी के पेपर से 18 सितंबर को शुरुआत होगी। जो 27 सितंबर तक चलेगी। वहीं ग्यारहवीं और बारहवीं की परीक्षा 18 सितंबर से शुरु होकर 26 सितंबर तक चलेगी। परीक्षाकाल में अगर कोई सार्वजनिक या स्थानीय अवकाश भी घोषित किया जाता है तो परीक्षा यथावत संपन्न होगी। टाईम टेबल जारी करते हुए लोक शिक्षण संचालनालय ने आदेश में कहा है कि परीक्षावधि में प्रायोगिक परीक्षा स्कूल प्राचार्य सुविधानुसार आयोजित कर सकते है। इसके अलावा संचालनालय के अवर संचालक रवींद्रसिंह ने सभी जिला शिक्षाधिकारियों को परीक्षा के संबंध में आदेश जारी किए है।

अनंत चतुर्दशी का अवकाश घोषित

भोपाल, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए भोपाल में 4 स्थानीय अवकाश की घोषणा की है। इन अवकाशों के तहत अनंत चतुर्दशी को स्थानीय अवकाश रहेगा। दशहरे और दीपावली के दूसरे दिन भी अवकाश रहेगा। वहीं भोपाल गैस त्रासदी स्मृति दिवस पर भी छुट्टी रहेगी। सरकारी कर्मचारियों के लिए 17 सितंबर 2024 को अनंत चतुर्दशी, 11 अक्टूबर शुक्रवार को दुर्गा विसर्जन, 1 नवंबर यानी दीपावली के अगले दिन अवकाश घोषित किया है।

सितंबर महीने को देखा जाए तो सरकारी कर्मचारियों को लगातार चार छुट्टियां मिलेंगी। 14 सितंबर को शनिवार है। 15 सितंबर को रविवार है। वहीं, 16 सितंबर को मिलाद-उन-नबी है। जबकि, 17 सितंबर को अनंत चतुर्दशी के कारण स्थानीय अवकाश घोषित हो गया है। ऐसे में कर्मचारियों को लगातार 4 दिन छुट्टियां मिल पाएंगी।

मंदसौर की नवाचारी शिक्षिका श्रीमती कीर्ति सक्सेना का चयन राज्यपाल पुरस्कार के लिए हुआ

विद्यार्थियों को कम लागत में विज्ञान से जोड़ने का किया सफल प्रयास

मंदसौर, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। मुझे गर्व है मेरे विद्यार्थियों पर जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी इस नवाचार के लिए, जिसके कारण मुझे राज्यपाल पुरस्कार के लिए चुना गया है। मेरे लिए शिक्षण केवल एक पेशा नहीं बल्कि जुनून है।

मंदसौर जिले की श्रीमती कीर्ति सक्सेना ने उनकी उत्कृष्ट शैक्षिक सेवाओं तथा विज्ञान और जीव विज्ञान के शिक्षण को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए वेस्टेज मटेरियल से स्व निर्मित मॉडल का उपयोग किया। जिससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ, बल्कि विद्यार्थियों में रचनात्मक और नवाचार की भावना भी जागृत हुई। श्रीमती कीर्ति सक्सेना ने जिले की सर्वश्रेष्ठ लेब की स्थापना की जो उनके दृढ संकल्प और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

उन्होंने प्रकृति से जुड़कर अध्यापन कार्य को और अधिक प्रभावी बनाया और अपने विद्यार्थियों को राज्य स्तर की शैक्षणिक गतिविधियों में सहभागिता के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा उन्होंने यूट्यूब चैनल की शुरुआत की, जिसमें वह अपनी शिक्षण विधियां और मॉडल को साझा करती हैं। ताकि अन्य शिक्षक और विशेष रूप से श्रमिक वर्ग के विद्यार्थी भी लाभान्वित हो सके। राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त करने पर श्रीमती कीर्ति सक्सेना ने अपने विद्यार्थियों, विद्यालय के सभी शिक्षक साथियों और मार्गदर्शी साथियों को धन्यवाद दिया है। यह पुरस्कार उन शिक्षकों के लिए प्रेरणा है जो शिक्षा में नवाचार लाकर विद्यार्थियों को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास कर रहे हैं। यह उनकी कडी मेहनत और शिक्षण के प्रति उनके समर्पण को मान्यता देता है। उल्लेखनीय है कि वर्ष ... शेष पेज 4 पर

सड़क दुर्घटना में 2 घायल

पिपलियामंडी, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। सडक दुर्घटना में बाइक सवार दो युवक घायल हो गए, जिन्हें एबूलेंस से मंदसौर जिला अस्पताल भर्ती कराया। जानकारी के अनुसार सोमवार शाम 4 बजे करीब फोरलेन पर रोड के राजा के निकट सडक हादसे में बाइक सवार साबाखेडा निवासी शुभम सोनी व कूचडोद निवासी कुन्दन पिता रामप्रसाद घायल हो गए। बाइक सवार को किसी ने टक्कर मारी या रैलिंग से टकराए यह पता नही चला। सूचना पर टोल प्लाजा पैरामेडीकल टीम के राहुल ब्रिजवानी, इमरान अली, हरीश गुर्जर, सलीम खान मौके पहुंचे व एबूलेंस से दोनों घायलों को मंदसौर जिला अस्पताल भर्ती कराया।

आर्टिफिशियल युग के दूतावासों में नजर आने लगे है पुराने टाइपराइटर

मंदसौर/उज्जैन, 02 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। खबर अजीब और अविश्वसनीय सी लग रही है पर यह सच है कि अंतर्राष्ट्रीय कार्यालयो, दूतावासों, राष्ट्र तथा सेना अध्यक्षों जैसे अन्य महत्वपूर्ण कार्यालयों में जमा किए जा चुके धूल खा रहे पुराने उंगलियों से टंकण करने वाले टाइपराइटरों की सफाई कर मरम्मत करा कर फिर से उपयोग करने लायक बनाकर उस काम करना शुरू किया जा चुका है। इसी तरह के स्तरीय कार्यालय में फिर से टाइप करने वाले कर्मियों की भर्तियां शुरू की जा चुकी है। यह भी स्पष्ट कर दें कि आधुनिक मेमोरी रखने वाले टाइपराइटर भी नहीं, शुद्ध रूप से एक-एक अक्षर को कागज पर टंकण करने वाले पुराने टाइपराइटर जिन्हें अधिकांश लोगों ने अटाले में बेचा होगा या कूडेदान में फेंक दिया होगा। स्मार्टफोन युग के युवाओ ने पुराने टाइपराइटर देखें भी नहीं होंगे, जिनकी तलाश युद्धस्तर पर की जा रही है।

आधुनिक शिक्षा जगत के छात्रों से लेकर स्मार्टफोन जैसी तकनीक से रूबरू वर्तमान युग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सहारे एक देश से बोलकर दूसरे देश में टाइप होता वार्तालाप जैसा प्रयोग करने को लालायित है। जिसमें ना टाइप करना है ना उंगली का उपयोग करना होता है और जानकारो की माने तो थोड़े ही समय बाद बोलने की भी जरूरत ना होकर सिर्फ सोचने पर से ही संदेश टाइप होने लगेगा। जिसे मिटाया भी जा सकेगा, सुधार कर बदलाव भी किया जा सकेगा। बीते एक दशक से कागज रहित डिजिटल युग में प्रवेश कर चुकी दुनिया ही अब इसी डिजिटल जानकारियां को साझा करने के दौरान होने वाली तकनीक और आंकड़ो की चोरी से डर कर पुराने टाइपराइटर का उपयोग करने पर उतर आई है।

चन्द्रमोहन भगत

ऐसे युग में अचरज भरी खबर ही है कि दुनिया भर के ताकतवर देशों, व्यक्तियों के आधुनिक कार्यालयो में पुराने टकटक आवाज करने वाले टाइपराइटरों का उपयोग शुरू भी हो चुका है। यह भी तय है कि एक तरफ ए आई तकनीक का जलवा स्वीकारा जा रहा है। दूसरी तरफ सुरक्षा तथा गोपनीयता की दृष्टि से पुराने टाइपराइटरों की टकटक निश्चित ही लगातार बढ़ती जाएगी। इस पर एक मैसेज की अनेक प्रतियों के लिए फिर से कार्बन पेपर का उपयोग भी बढना तय है । और स्याही लगी हुई रिबन फिर से कार्यालयों में नजर आने वाली है । आधुनिक तकनीक को जानने वाले टच स्क्रीन उपकरणों का उपयोग करने वाले, समझ ही गए होंगे कि ए आई के युग में पुराने टाइपराइटर का फिर से उदय क्यों हो रहा है। कारण साफ है कि दुनिया भर के बेतार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से डाटा हैक करने वालों का कोई भी कभी भी शिकार हो जाता है।

यही कारण है कि इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों से भेजे जाने वाले डाटा संदेश या अन्य जानकारियां भी हैकरो द्वारा चुराई जाने लगी है। किसी के अकाउंट से पैसे निकालना, ओटीपी या कोड नंबर मिलने पर डाटा चोरी करना आम होता जा रहा है। इन हरकतों से बचने के लिए ही पुराने टाइपराइटर, कार्बन पेपर और स्याही लगी रिबन और उस पर काम करने वाले टाइपिस्ट कर्मियों की मांग अचानक बढने लगी है। इस तरह के पुराने टाइपराइटरों को बाजार से बाहर किया था तत्कालीन इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर ने जो विद्युत कनेक्शन के सहारे चलाए जाते थे। इसमें टंकण की गति अच्छी थी ही अनेक कॉपियों के लिए कार्बन की जरूरत ही नहीं पड़ती थी, एक बटन दबाकर अनेक कॉपियां निकाली जा सकती थी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का मतलब कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग, इसमें माना जा रहा था कि और अधिक बेहतर उपकरण ईजाद होंगे। प्रत्येक क्षेत्र में हो भी रहे हैं। खासकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांति की उम्मीद की जा रही है। किन्तु, इसी इलेक्ट्रॉनिक जगत में हैकर कहलाने वाले तत्व का लोहा मानते हुए दुनिया के आधुनिक सुरमा भी शरणागत होकर चार दशक पुरानी तकनीक वाली टंकण मशीन को तलाशने को मजबूर हो गए हैं। साथ ही मशीन का निर्माण करने वाले पुराने टेक्नीशियन कामगारों की भी तलाश जोरों पर की जा रही है। जानकारों की माने तो इस पर काम करने वाले टाइपिस्ट और रखरखाव करने वालों की कीमतें वर्तमान सॉफ्टवेयर इंजीनियर के मुकाबले हो चली है।

विचार-मंथन

भारत–चीन सीमा विवाद पर कड़वाहट दूर करने की पहल

भारत और चीन के बीच विवादित सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बहाल करने के मकसद से बेजिंग में हुई परामर्श और समन्वय के लिए कार्यतंत्र यानी डब्लूएमसीसी की इकतीसवीं बैठक निस्संदेह आशाजनक कही जा सकती है। इस बैठक में दोनों पक्षों ने इस बात पर जोर दिया कि सीमा पर तनाव को कम करने और लंबित मुद्दों का समाधान खोजने के लिए ऐसी बातचीत बेहद जरूरी है, जो स्पष्ट, रचनात्मक और भविष्य की जरूरी संभावनाओं के प्रति उन्मुख हो। यह बैठक दरअसल, पिछले महीने दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की आसियान और शंघाई शिखर सम्मेलन के दौरान हुई मुलाकातों में सीमा विवाद को सकारात्मक ढंग से निपटाने को लेकर बनी सहमति के आधार पर बुलाई गई थी। यों भारत-चीन सीमा विवाद पुराना है, मगर चार साल पहले गलवान घाटी में दोनों देशों के सैनिकों के बीच हुए संघर्ष के बाद कड़वाहट बढ़ गई थी। वह तनाव अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। तब से लेकर अब तक इसे सुलझाने के लिए राजनयिक और सैन्य स्तर की कई बैठकें हो चुकी हैं। ताजा बैठक उसी की कड़ी थी। इसे सकारात्मक रुख माना जाना चाहिए कि चीन ने कभी सीमा विवाद को सुलझाने के लिए बातचीत से खुद को अलग नहीं किया। कुछ मौकों पर तो खुद चीन के सैन्य अधिकारियों ने भी बैठक बुलाई और उसके सकारात्मक नतीजे भी देखने को मिले। अगर चीन सचमुच सीमा पर शांति और स्थायित्व का पक्षधर है, तो उससे लचीले रुख की अपेक्षा स्वाभाविक है। दरअसल, अनेक मौकों पर देखा गया है कि बैठकों में तो चीन के अधिकारी सकारात्मक रुख जाहिर करते हैं, पर व्यवहार में वहां की सेना विस्तारवादी नीतियों पर आगे बढ़ती नजर आती है। भारत की शिकायत अभी अपनी जगह बनी हुई है कि चीन ने भारत के हिस्से वाले भूखंड पर नजर गड़ाई हुई है। कई जगह उसने अवैध निर्माण तक की कोशिश की है। राजनीतिक स्तर पर भी चीन की रणनीति भारत को चारों तरफ से घेरने की ही देखी जाती रही है। वह भारत के पड़ोसी देशों में अपनी पैठ बना कर एक तरह से भारत पर सामरिक शिकंजा कसने का प्रयास करता देखा जाता है। दो देशों के रिश्ते पारदर्शिता पर ही टिकाऊ और स्थायी बन सकते हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि विश्व मंचों और औपचारिक बैठकों में तो रचनात्मक संबंधों की जरूरत पर बल दिया जाए और व्यवहार में संदेह पैदा करने वाली गतिविधियां चलाई जाएं। पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश में उसने आर्थिक सहयोग के नाम पर जैसी गतिविधियां चलानी शुरू की हैं, वे भारत के लिए किसी भी रूप में रचनात्मक नहीं कही जा सकतीं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में दबदबा कायम करने के लिए चीन ने जिस तरह की सामरिक बाड़बंदी की है, वह भी भारत के लिए चिंता का विषय है। इन सबके बावजूद भारत व्यापारिक मामलों में चीन का एक बड़ा सहयोगी है। इसलिए केवल कूटनीतिक स्तर पर समन्वय का आदर्श पेश करने के बजाय जब तक वह व्यावहारिक धरातल पर भारत के मामले में विस्तारवादी नीतियों का त्याग नहीं करेगा, इसके सकारात्मक नतीजे निकलने मुश्किल बने रहेंगे।

चंपई से पहले भी कुर्सी जाने पर कई नेताओं ने छोड़ी थी पार्टी

श्रुति श्रीवास्तव

झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के वरिष्ठ नेता चंपई सोरेन शुक्रवार को भाजपा में शामिल हो गए। चंपई का कहना है कि हेमंत सोरेन को जमानत मिलने पर जेल से रिहाई के बाद मुख्यमंत्री पद छोड़ने के लिए कहे जाने पर उन्हें अपमानित महसूस हुआ। दरअसल, मनी लॉन्ड्रिंग मामले में फरवरी में अपनी गिरफ्तारी से ठीक पहले हेमंत ने इस्तीफा दे दिया था और चंपई को बागडोर सौंप दी थी लेकिन जमानत मिलने के बाद हेमंत पद वापस चाहते थे इसलिए चंपई को सीएम पद से इस्तीफा देने के लिए कहा गया। चंपई के सीएम पद से इस्तीफा देने के लगभग दो महीने बाद अब उन्होंने राज्य में विधानसभा चुनाव होने से कुछ महीने पहले प्रतिद्वंद्वी भाजपा में शामिल होने का फैसला किया। गुजरात के साबरकांठा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद गुलजारीलाल नंदा ने 27 मई, 1964 को जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। नंदा इस दौरान गृहमंत्री थे। प्रथम प्रधानमंत्री के निधन के बाद उन्हें कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाया गया। हालांकि, 15 दिन से भी कम समय के बाद कमान लाल बहादुर शास्त्री को दे दी गई। जिन्होंने 9 जून 1964 को कांग्रेस सांसदों द्वारा उन्हें पार्टी नेता चुने जाने के बाद प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला। गुलजारीलाल नंदा ने लालबहादुर शास्त्री को नामांकित किया था और पीएम पद की दौड़ में उनके प्रमुख प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखे जाने वाले मोरारजी आर देसाई ने उनका समर्थन किया। शास्त्री नेहरू मंत्रिमंडल में बिना विभाग के मंत्री रहे थे। 11 जनवरी, 1966 को प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के ठीक डेढ़ साल बाद लालबहादुर शास्त्री का ताशकंद में निधन हो गया, जब वह पाकिस्तान के साथ शांति वार्ता के लिए तत्कालीन यूएसएसआर की यात्रा पर थे। जिसके बाद नंदा ने दोबारा पीएम पद की शपथ ली। उनका दूसरा कार्यकाल एक पखवाड़े से भी कम समय तक चला (24 जनवरी तक) जब कांग्रेस द्वारा नेता चुने जाने के बाद नेहरू की बेटी इंदिरा गांधी नई प्रधानमंत्री बनीं। गुलजारीलाल नंदा ने 10 अप्रैल, 1977 को कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। यह इंदिरा गांधी सरकार द्वारा दो साल के आपातकाल को समाप्त करने के ठीक एक साल बाद था। एक बयान में नंदा ने कहा था, मैंने पहले दोस्तों और शुभचिंतकों के पार्टी छोड़ने के दबाव का विरोध किया था और उन लोगों के साथ मिलकर काम किया था जो इसके खिलाफ थे। हालांकि वह पार्टी में बने रहे क्योंकि उन्हें जिम्मेदार विपक्ष की ताकत के रूप में कांग्रेस पर भरोसा था। उन्होंने आगे कहा, पिछले कुछ दिनों में पार्टी के भीतर जो स्थितियां विकसित हुई हैं उन्होंने इसे असहनीय बना दिया है। गुटों के बीच बढ़ते मतभेद और तीव्र शत्रुता ने मुझे गंभीर झटका दिया है। नंदा का 1998 में 99 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। बिहार के हालिया राजनीतिक इतिहास में जीतन राम मांझी दूसरे नेता थे जिन्हें पर्दे के पीछे से बाहर निकाला गया और सीएम बनाया गया। जेडीयू सुप्रीमो नीतीश कुमार के प्रति उनकी वफादारी का फल मिला था। 2014 के लोकसभा चुनावों में भाजपा के हाथों हार और जद यू के खराब प्रदर्शन के बाद, बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश ने परिणामों की जिम्मेदारी लेते हुए अप्रत्याशित रूप से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने अपनी जगह दलित नेता जीतन राम मांझी को नामित किया। इसके दस महीने बाद नीतीश ने मांझी को सीएम के रूप में उनकी वापसी का रास्ता बनाने के लिए इस्तीफा देने के लिए कहा। नीतीश को झटका देते हुए जीतनराम मांझी ने इनकार कर दिया, जिसके कारण उन्हें जद (यू) से निष्कासित कर दिया गया। इसके बाद राज्यपाल ने मांझी से विश्वास मत हासिल करने को कहा और भाजपा ने अपने लिए मौका भांपते हुए उन्हें सरकार का समर्थन देने की पेशकश की। हालांकि, जीतनराम मांझी ने इस्तीफा देने का फैसला किया और अपनी पार्टी हम लॉन्च की जो तुरंत भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए में शामिल हो गई। गठबंधन में कई बदलावों के बाद, हम (एस) ने हाल ही में लोकसभा चुनाव एनडीए की छत्रछाया में लड़ा, जिसमें जेडीयू भी शामिल थी। जीतनराम मांझी ने गया सीट जीती और एनडीए के साथ उनकी साझेदारी के फलस्वरूप उन्हें सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय मिला। एआईएडीएमके से निकाले गए पन्नीरसेल्वम यानी ओपीएस तीन बार तमिलनाडु के सीएम रह चुके हैं। इनमें से दो बार उन्होंने अन्नाद्रमुक सुप्रीमो जयललिता के लिए कदम उठाया। सितंबर 2001 में, सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों का हवाला देते हुए, मुख्यमंत्री और विधायक के रूप में जयललिता की नियुक्ति को रद्द कर दिया, क्योंकि वह एक लैंड डील केस में सजा का सामना कर रही थीं। यह मामला 1991 में पूर्व सांसद सुब्रमण्यम स्वामी द्वारा दायर किया गया था जिन्होंने आरोप लगाया था कि जयललिता और उनकी लंबे समय से सहयोगी वीके शशिकला ने तमिलनाडु लघु उद्योग निगम (टीएएनएसआई) से जमीन खरीदी थी और इसे कम कीमत पर निजी फर्मों को बेच दिया था। जिसके बाद उन्हें चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित कर दिया गया। जयललिता को पद छोड़ना पड़ा और उन्होंने अपने स्थान पर पन्नीरसेल्वम को नामित किया। उनका कार्यकाल छह महीने तक चला। 2003 में डीएमके ने जयललिता के मामले की सुनवाई को कर्नाटक में स्थानांतरित करने के लिए इस आधार पर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया कि उनके नेतृत्व में तमिलनाडु में निष्पक्ष सुनवाई संभव नहीं थी। सितंबर 2014 में एक विशेष अदालत ने मामले में जयललिता और तीन अन्य को दोषी ठहराया और चार साल की जेल की सजा के साथ-साथ 100 करोड़ रुपये का जुर्माना भी लगाया। 29 सितंबर को जयललिता ने दोषसिद्धि को चुनौती देते हुए कर्नाटक उच्च न्यायालय का रुख किया और जमानत मांगी। उसी दिन सर्वसम्मति से अन्नाद्रमुक विधायक दल के नेता चुने जाने के बाद पन्नीरसेल्वम ने उनके उत्तराधिकारी के रूप में शपथ ली।

हर दिन भारत से निकलता है 15 हजार टन अपशिष्ट

रेखा शाह आरबी

हम सब इस बात पर शायद ही कभी गौर करते हैं कि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक एक अभिन्न अंग बन चुका है। अपने घर के अंदर और घर के बाहर जहां भी नजर दौड़ाएं, कुछ न कुछ चीज प्लास्टिक की नजर आ ही जाती है। सुबह से लेकर शाम तक अनगिनत प्लास्टिक की चीजों का प्रयोग करते रहते हैं। धरती से लेकर समुद्र और पहाड़ तक प्लास्टिक पहुंच गया है। ऐसा लगता है जैसे प्लास्टिक ने अपना हर तरफ साम्राज्य फैला लिया है। जबकि प्लास्टिक के अपने खुद के हाथ पैर नहीं होते हैं। उसे फैलाने वाले हम सभी होते हैं। बहुत दुखद है कि जिस दुनिया में मनुष्य को रहना, सांस लेना, जीवन जीना है, उस दुनिया को नष्ट करने का जरिया मनुष्य ही बनते जा रहे हैं। उससे भी दुखद बात यह है कि यह मात्र मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरा नहीं है, बल्कि यह समूचे जीव जगत के लिए नुकसानदायक है। मनुष्य के सुविधा भोगी होने का मूल्य अन्य पशु पक्षी-चुका रहे हैं। रोजमर्रा के इस्तेमाल में आने वाला प्लास्टिक दरअसल, वर्षों तक धरती के नीचे दबकर भी ज्यों का त्यों पड़ा रहता है। वह अन्य पदार्थों की तरह आसानी से विघटित नहीं होता है। इस कारण यह और नुकसानदेह हो जाता है। केवल हमारे देश में ही पंद्रह हजार टन प्लास्टिक अपशिष्ट प्रतिदिन निकलता है, लेकिन इसके निस्तारण का कोई समुचित प्रबंध नहीं होता है। प्लास्टिक को बनाने में बहुत सारे जहरीले रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है, जिसके कारण यह जहां भी रहता है, वहां बीमारी, प्रदूषण और कई जटिल और गंभीर रोग पैदा करता है। पानी में जाने पर पानी को भी प्रदूषित कर देता है। प्रदूषण का नतीजा है कि आज अस्पताल रोगियों से भरे रहते हैं। स्वस्थ जीवन मुहाल है। आज दुनिया भर में जिधर भी नजर डालें, हम सब प्लास्टिक कचरे के ढेर पर बैठे हुए हैं। विनाश के मुहाने पर हैं। सोचने में काफी भयावह है कि जितनी भारी मात्रा में प्लास्टिक अपशिष्ट निकल रहा है, उसके निष्पादन का कोई उपाय नहीं है। एक दिन सब इसी प्लास्टिक के अपशिष्ट के नीचे दबे नजर आएंगे। और इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों की गैर-जिम्मेदारी और लापरवाह आदत है। पहले भी जीवन चलता था, जिसमें प्लास्टिक नाममात्र का इस्तेमाल होता था। या बिल्कुल भी नहीं होता था। तब भी जीवन आसानी से चलता था। प्लास्टिक ऐसी धातु नहीं है कि उसके बिना जीवन न चल सके। प्लास्टिक से जितना मनुष्य को फायदा हो रहा है, उससे हजार गुना ज्यादा बीमारी और प्रदूषण हो रहा है। उसके बाद भी लोग सचेत नहीं हो रहे हैं। लोगों की आदत हो चुकी है कि वह हर बात के लिए सरकार की तरफ देखते हैं। खुद से अपनी जिम्मेदारी उठाने से कतराते हैं। जबकि प्लास्टिक का बहिष्कार करना या खुद से हर मनुष्य की जिम्मेदारी होनी चाहिए। आजकल अधिकतर वस्तुओं की पैकिंग के लिए प्लास्टिक का ही उपयोग किया जाता है। खाने-पीने से लेकर दूध के पैकेट तक, सभी में प्लास्टिक का रैपर और पन्नियों का उपयोग किया जाता है। आमतौर पर पालिथीन का उपयोग सिर्फ एक बार किया जाता है। उसके बाद उसे कचरे के ढेर में फेंक दिया जाता है। ये प्लास्टिक अगर किसी धरती के हिस्से में दब जाते हैं, तो सालों तक इसी अवस्था में बने रहकर उस भूमि को बंजर करते हैं। यह बात लगभग हर कोई जानता है, फिर भी इस तरफ से लापरवाह बना रहता है। पहले लोग प्लास्टिक की जगह कपड़े और कागज, जूट से बने थैलों का इस्तेमाल करते थे। उन्हें इस्तेमाल करने के बाद अगर कहीं फेंक भी दिया जाए, तो वे कुछ समय बाद आसानी से विघटित होकर मिट्टी में मिल जाते थे। प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाते थे। आज भी हम छोटे-छोटे उपाय करके बहुत हद तक धरती को बचा सकते हैं। जैसे प्लास्टिक की जगह कपड़े, कागज और जूट की बनी थैलियां इस्तेमाल करें। प्लास्टिक का जब भी सामान खरीदें तो प्लास्टिक की पीईटीई और एचडीपीई प्रकार के समान को चुन सकते हैं, क्योंकि इस प्रकार के प्लास्टिक का पुनर्चक्रण करना आसान होता है।पहले के जमाने की तरह मिट्टी के पारंपरिक तरीके से बनी चीज और बर्तनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। अपने आसपास के लोगों को भी प्लास्टिक से होने वाली हानियों के बारे में सचेत कर सकते हैं। प्लास्टिक के ऐसे किसी भी सामान को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, जो मात्र एक बार इस्तेमाल होती है।

पेयजल पर सवाल

यह कितनी गंभीर बात है कि दुनिया में लगभग 4.4 अरब लोगों को साफ पानी नसीब नहीं है। विज्ञान पत्रिका साइंस में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, दुनिया में आधे से ज्यादा लोग असुरक्षित पानी पीते हैं, जो पिछले अनुमान से दोगुना है। 'स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ एक्वाटिक साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी' में जल शोधकर्ता एस्थर ग्रीनवुड का कहना है कि इतने सारे लोगों तक साफ पानी की पहुंच नहीं होना एक अस्वीकार्य तथ्य है और स्थिति को तत्काल बदलने की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र 2015 से ही स्वच्छ पेयजल तक पहुंच को मानवाधिकार से जोड़कर देख रहा है। उसकी कोशिश रही है कि लोगों तक साफ जल व्यवस्थित ढंग से पहुंचाया जाए। पहले पूरा जोर जल के बुनियादी ढांचे पर था, ताकि पेयजल के स्रोतों में सुधार किया जा सके। मोटे तौर पर गंभीर प्रयासों के बाद दुनिया की 90 प्रतिशत मानव आबादी के पास पीने का पानी पहुंच गया या पहुंचा दिया गया। दुनिया भर में कुओं, नदियों, पाइप से जल आपूर्ति, वर्षा जल संग्रहण पर ध्यान दिया गया। बाद में जब उपलब्ध पानी को परखने पर ध्यान दिया गया, तो पाया गया कि पानी दिया तो जा रहा है, पर वह पूरी तरह स्वच्छ नहीं है। एक बड़ी चिंता यह है कि पानी के संबंध में दुनिया भर की सरकारों के पास पुख्ता आंकड़े नहीं हैं। लोगों तक जल पहुंचाने के बड़े प्रयासों के लगभग एक दशक बाद भी सांख्यिकीविद् अभी भी अधूरे आंकड़ों पर भरोसा करने को मजबूर हैं। ऐसे में, सवाल यह पैदा होता है कि क्या दुनिया में कुछ ही लोगों को पूरी तरह से साफ पानी पीने के लिए मिल रहा है? ग्रीनवुड साफ स्वीकार करते हैं कि हमारे पास पीने के पानी की गुणवत्ता से संबंधित पर्याप्त आंकड़े नहीं हैं। आज वैश्विक आबादी के सिर्फ आधे हिस्से के लिए जल-गुणवत्ता संबंधी आंकड़े उपलब्ध हैं। मतलब जल की वास्तविक स्थिति का पता वैज्ञानिकों को भी नहीं है। क्या अमीर देशों के पास जल के स्पष्ट आंकड़े हैं? क्या अभावग्रस्त देशों में लोगों तक कभी स्वच्छ पेयजल पहुंच पाएगा? इसमें कोई संदेह नहीं कि दुनिया अपने बुनियादी लक्ष्यों तक पहुंचने में हांफने लगी है। साल 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने मानव कल्याण में सुधार के लिए सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किए थे। उन लक्ष्यों में से एक है, 2030 तक सभी के लिए सुरक्षित और किफायती पेयजल की पहुंच सुनिश्चित करना। हालांकि, ऐसा लगता है कि सरकारों का इस ओर ध्यान नहीं है। यह गौर करने की बात है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र की बाल विकास से संबंधित एजेंसी यूनिसेफ ने मिलकर शोध किया था। साल 2020 में यह अनुमान लगाया गया था कि दुनिया में 2.2 अरब लोगों तक साफ पेयजल की पहुंच नहीं है। ग्रीनवुड और उनके सहयोगियों ने ज्यादा विस्तृत और बेहतर तरीके से जल की उपलब्धता को परखा है। पानी को परखने में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि किसी शहर में पानी के पूरे आंकड़े रखे जा रहे हैं या नहीं। जल की गुणवत्ता को स्थान विशेष में पहुंचकर जांचा गया है। यह भी जानना जरूरी है कि स्वच्छ पेयजल से वंचित 4.4 अरब में से लगभग आधे लोग दक्षिण एशिया और उप-सहारा अफ्रीका में रहते हैं। लोगों को सबसे साफ और सबसे ज्यादा पानी दक्षिणी यूरोप में उपलब्ध है। क्या भारत जैसे देश को जल के मोर्चे पर ज्यादा ईमानदारी से सुधार करना चाहिए? अनेक देश हैं, जिन्हें साफ पानी के लिए लंबा सफर तय करना है।

सीजेआई चंद्रचूड़ ने पीएम मोदी की मौजूदगी में कहा–लोगों को अहसास हो की न्याय होता है

आज का राशिफल

मेष : [illegible] शुभांक-1-3-5

वृषभ : [illegible] शुभांक-3-6-9

मिथुन : [illegible] शुभांक-5-6-7

कर्क : [illegible]

सिंह : [illegible] शुभांक-3-5-7

कन्या : [illegible] शुभांक-2-5-7

तुला : [illegible] शुभांक-2-4-6

वृश्चिक : [illegible] शुभांक-3-6-9

धनु : [illegible] शुभांक-4-6-8

मकर : [illegible] शुभांक-3-6-8

कुंभ : [illegible] शुभांक-3-6-8

मीन : [illegible] शुभांक-2-4-6

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5345

	4	7			3			5
			6	8	7		4	
			2	4		9		7
		6					1	8
				1				
2	7					5		
8		5		6	1			
	9		8	5	2			
1			9			8	5	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5344

1	4	7	9	5	3	8	2	6
9	5	3	8	6	2	4	7	1
6	2	8	1	7	4	9	5	3
3	6	9	7	1	8	5	4	2
4	1	2	3	9	5	6	8	7
7	8	5	4	2	6	1	3	9
2	9	1	5	8	7	3	6	4
5	3	6	2	4	1	7	9	8
8	7	4	6	3	9	2	1	5

वर्ग पहेली 5345

संकेत: बाएं से दाएं

1. मध्यप्रदेश की एक औद्योगिक बस्ती जो अपने अखबारी कागज मिल के लिए प्रसिद्ध है (5)
3. कच्चे आम या इमली का बना खट्टा-मीठा पेय पदार्थ (2)
7. कुलबुलाहट, कुलबुलाने का भाव (4)
8. यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है (3)
9. यह अरब का एक प्रायद्वीप है जिसकी राजधानी दोहा है (3)
11. निकाह, दो की संख्या (2)
13. वह गद्य या पद्य का लेख जो किसी विशेष के शुभअवसर पर लिखा जाए (5)
16. वेतन, पगार, निश्चित अवधि में मिलने वाला पारिश्रमिक शुल्क (4)
17. गणित में दो संख्याओं का योग (3)
19. हिम्मत, पराक्रम, बहादुरी (3)
21. रात्रिमुख, संध्याकाल, सांझ (2)
23. दिल या मन के अंदर ही, चुपचाप (5)
25. ख्याति, शोहरत, प्रसिद्धि (2)

ऊपर से नीचे

1. ईमानदार और सच्चा (5)
2. नाव के मस्तूल में बांधा जाने वाला कपड़ा (2)
3. लवण, नोन (3)
4. बात या सही अर्थ न समझना (6)
5. शलभ, पतंगा, टिड्डा (4)
6. हजरत मुहम्मद की छंदोबद्ध स्तुति (2)
10. प्रवृत्तिशील, ध्यानमग्न (1)
12. मन को रिझाने वाला (5)
14. घी, जौ, तिल आदि को मंत्र पढ़ते हुए अग्नि में डालने का कृत्य (3)
15. यह गौतम बुद्ध की माता का नाम था (2)
18. एशिया महाद्वीप में स्थित देश जिसके निकटतम पड़ोसी देश, चीन कोरिया तथा रूस है (3)
19. गाए जाने वाले वेदमंत्र (2)
20. हस्ताक्षर, सही, दस्तखत (2)
21. कंघा, जुलाहे की कूंची (2)
22. मेरा या मेरी (संस्कृत) (2)

वर्ग पहेली 5344 हल

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा 15 तक चलेगा

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। सडक सुरक्षा पखवाडा 15 सितम्बर 2024 तक चलेगा। सडक सुरक्षा पखवाडा अतंर्गत गांधी चौराह मंदसौर से अधिकारी कर्मचारियों द्वारा बाईक रैली निकाली गई। रैली को अपर कलेक्टर श्रीमती एकता जायसवाल द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली गांधी चौराह से प्रारंभ होकर नाहटा चौराहा से पुलिस पेट्रोल पम्प से अम्बेडकर चौराहा से नेहरू बस स्टेण्ड से भारत माता चौराहा से शुक्ला चौक से नयापुरा रोड से महाराणा प्रताप बस स्टेण्ड से पीजी कॉलेज ग्राउण्ड में रैली का समापन हुआ। इस दौरान एएसपी श्री गौतम सोलंकी, एसडीएम श्री शाक्य, जिला अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

कुकड़ेश्वर के सीएमओ परमार बेस्ट एम्पलाई आफ दी मंथ के पुरस्कार से सम्मानित

नीमच, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमाशु चंद्रा ने सोमवार को कलेक्टोरेट नीमच में आयोजित एक कार्यक्रम में न.प. कुकडेश्वर के सीएमओ श्री कमल परमार को सी.एम. हेल्पलाईन की शिकायतों के निराकरण के उत्कृष्ट कार्य करने पर बेस्ट एम्पलाई आफ दी मंथ के पुरस्कृत से सम्मानित किया। कलेक्टर श्री चंद्रा ने सीएमओं श्री परमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। इस मौके पर ए.डी.एम. श्रीमती लक्ष्मी गामड सभी डिप्टीं कलेक्टर एवं जिला अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

सड़क सुरक्षा सप्ताह अंतर्गत व्याख्यान सम्पन्न

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। शासकीय कन्या महाविद्यालय, मंदसौर की प्राचार्य डा.उमा गगरानी ने बताया कि महाविद्यालय में सडक सुरक्षा सप्ताह के अंतर्गत व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री राजीव सप्रा, आईसीटी वाईस प्रेसिडेंट, रोड सेफ्टि एक्सपर्ट दिल्ली बडोदरा नेशनल एक्सप्रेस वे ने छात्राओं को सडक दुर्घटनाओं के कारण एवं समाधान के बारे में पीपीटी के माध्यम से बताया। आपने सुरक्षा हेतु दो पहिया वाहनों के लिए बताया कि हेलमेट अवश्य पहने यह सिर्फ आपके सिर की ही नहीं बल्कि धुल एवं तेज रोशनी से भी बचाव करता है। क्षमता से अधिक सवारी नहीं बैठाना चाहिए। चार पहिया वाहनों के चालकों एवं सवारियों को सीट बैल्ट अवश्य पहनना चाहिए, वाहन चलाते समय ध्यान भटकाने वाली गतिविधि जैसे मोबाईल आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। नशा करके वाहन चलाना अपराध है एवं उल्टी दिशा में नहीं चलाना चाहिए। साथ ही सडक सुरक्षा संकेतकों का पालन करना चाहिए।साथ ही नेशनल एक्सप्रेस वे पर किसी भी अप्रिय स्थिति में 1033 नम्बर डायल करने से आपको जल्दी सहायता मिलेगी। आपने छात्राओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों काभी निवारण किया। इस अवसर पर लालका प्रसाद सीनियर इंजीनियर, रमेश कुमारजी असिस्टेंट हाइवे इंजिनियर, अभिषेकजी मेन्टेनेन्स अधिकारी टीम उपस्थित रही।

विषय प्रवर्तन करते हुए डा. पी. एल. पाटीदार ने बताया कि दुर्घटनाओं से बचने के लिए सडक सुरक्षा को लेकर के प्रत्येक नागरिक को जागरूक होना चाहिए एवं यातायात नियमों का पालन करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डा.अनुराग आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्टाफ एवं 40 से अधिक छात्रायें उपस्थित रही।

श्रमोदय आदर्श आईटीआई के लिए 8 ट्रेड में प्रवेश प्रकिया प्रारम्भ

नीमच, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। म.प्र भवन एवं अन्या संनिर्माण कर्मकार कल्या ण मंडल के अंतर्गत संचालित श्रमोदय आदर्श आईटीआई में वर्ष 2024-25 के लिए 8 ट्रेड में प्रवेश प्रक्रिया का कार्य डीएसडी पोर्टल के माध्यआम से किया जा रहा है। आईटीआई में केवल मंडल पंजीकृत श्रमिकों की संतानों को प्रवेश दिया जाएगा। योजना से संबंधित विस्तृीत जानकारी के लिए कलेक्टो रेट परिसर कक्ष क्रमांक 50 श्रमपदाधिकारी कार्यालय श्रम विभाग नीमच में कार्यालयीन समय में संपर्क किया जा सकता है।

गायत्री परिवार द्वारा नालछा माता मंदिर परिसर व गार्डन में की सफाई, पौधे भी रोपे गये

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। गायत्री परिवार द्वारा प्रात: 9 से 12 बजे तक नालछा माता मंदिर परिसर में सफाई अभियान चलाकर परिसर को साफ किया और गेट के बाहर हो रही बहुत गंदगी को स्वच्छता अभियान चलाकर श्रमदानियों द्वारा हटाया गया।

गायत्री परिवार के श्रमदानियों ने यहां से करीब एक ट्राली कचरा साफ कर इकट्ठा किया गया और मंदिर के पंडितजी को अवगत कराया। श्रमदानियों ने मंदिर समिति एवं भक्तों से निवेदन किया कि मंदिर अंदर से साफ रहता है लेकिन बाहर से सफाई नहीं होने के कारण काफी गंदगी पसरी रहती है। इसलिये बाहर भी नियमित सफाई होगी तो गंदगी नहीं होगी। बारिश के मौसम में पानी भर जाने व गंदगी होने से मच्छरों का प्रकोप बड जाता है। ऐसे में नियमित सफाई एवं लाल दवाई का छिडकाव जरूरी है। जिससे आने वाले दर्शनार्थी माता के दरबार में आकर अच्छा अनुभव करे। मंदिर में सफाई व पर्यावरण पर मंदिर समिति को पूरा ध्यान देना चाहिये जो दशनार्थी मंदिर में आते है उन्हें आसपास गंदगी होने पर उनका मन दुखी होता है। क्योंकि मंदिर प्रसिद्धी लिये हुए है लेकिन बाहर गंदगी का ढेर लगा हुआ है। स्वच्छता प्रभारी रमेश सोनी व हर्ष शर्मा ने कहा कि हमने नगर के बगीचों व मंदिर परिसर की साफ सफाई, नदी, जल स्त्रोत की स्वच्छता का अभियान चलाकर जनजागृति लाने का प्रयास किया जा रहा है। 2026 तक ये अभियान चलायेंगे। मानव का कर्तव्य है वह गायत्री

परिवार से जुडकर प्रकृति का संतुलन बनाये रखने हतु थोडा समय निकाले। अब्दुल कादर मंसूरी एडवोकेट ने भी मॉ के दरबार में श्रमदान किया और कहा कि ने कार्य करने से मन प्रसन्न होता है और कुदरत का आशीर्वाद मिलता है। शरीर स्वस्थ रहता है श्रमदान हर व्यक्ति को एक दो घण्टे करना चाहिये।

राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में खिलाड़ियों ने बढ़ाया दलौदा महाविद्यालय का मान-धनोतिया

दलौदा, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। राष्ट्रीय स्तर पर पूर्व मे महाविधालय के छात्र छात्राओं ने खो खो, कबड्डी, हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, एथलेटिक्स, कुश्ती आदि खेल के क्षेत्र में अपना शानदार प्रदर्शन किया है खो खो में कृष्ण पाटीदार हॉकी में रानू पोरवाल विष्णु धाकड ने वेस्ट जोन प्रतियोगिता में चयनित होकर दलौदा क्षेत्र को गोरवान्वित किया है यहां की बालिकाएं खेलो के साथ यूपीएससी प्रतियोगिताओं की भी तैयारी कर रही है महाविधालय के ओम प्रकाश गुर्जर ने राष्ट्रीय स्तर पर विक्रम यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व किया है वही खिलाडियों को श्री स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय दलौदा खेलो के क्षेत्र में अच्छे अवसर दे रहा है विगत कई वर्षों सें खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर कई बार महाविधालय को खेलो के क्षेत्र में गोरवान्वित किया है उक्त उद्गार शासकीय महाविद्यालय दलौदा में आयोजित खेल प्रतिभा सम्मान समारोह पर जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री हेमंत धनोतिया ने व्यक्त किए। आप ने मौजूद खिलाडियों को आश्वस्त किया कि जल्दी ही महाविधालय में एनसीसी इकाई भी प्रारंभ हो जाएगी वही खिलाडियों नई तकनीक से खेलने हेतु कबड्डी मेट एवम टेबल टेनिस की टेबल भी उपलब्ध करवा दी गई है जदल्द ही इसकी सुविधा भी खिलाडियों को मिलेगी कार्यक्रम की शुरुआत अतिथि परिचय से हुई। इसके बात स्वागत की बेला में पधारे हुए अतिथियों का प्राचार्य डॉ माला हकवाडिया द्वारा किया गया तत्पश्चात खेल प्रतिभाओं का स्वागत प्रो अरुणा नापित प्रो प्रिया जैन प्रो मेघा जोशी प्रो रावत आदि ने स्वागत किया इसके बाद सभी को सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रो गजराज सिंह पंड्या ने किया एवम पधारे हुए अतिथियों का आभार क्रीडा अधिकारी रजाक मेवा फरोश ने माना।

वृद्धजन स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 5 को

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। आयुष विभाग मप्र. शासन भोपाल के निर्देशानुसार जिला आयुष अधिकारी डॉ. कमलेश धनोतिया द्वारा बताया गया कि जिले के 24 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर आयुष पर वृद्धजन स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 5 सितंबर 2024 को किया जाएगा। जिसमें वृद्ध लोगों जाँच एवं उपचार परामर्श देकर नि:शुल्क औषधि वितरण किया जाएगा।

निबंध व वाद-विवाद प्रतियोगिता आज

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर के प्राचार्य डॉ. डी.सी. गुप्ता द्वारा बताया गया कि सडक सुरक्षा पखवाडा के अंतर्गत निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 3 सितंबर 2024 को किया गया है। निबंध प्रतियोगिता 3 सितंबर को प्रात: 11 बजे विषय सडक सुरक्षा महत्व और आवश्यकता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता प्रात: 12 बजे विषय सडक सुरक्षा सिर्फ प्रशासन की जिम्मेदारी है पर कक्ष क्रमांक 205 शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर में आयोजित की जाएगी।

पंजीकृत श्रमिक ई-श्रमकार्ड बनवाए

नीमच, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। म.प्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याीण मंडल के अंतर्गत पंजीकृत श्रमिक ईश्रम कार्ड हेतु पात्र है। जिले के सभी पंजीकृत श्रमिक अपने नजदीकी सी.एस.सी केन्द्रत ,एम.पी.ऑन लाईन, ग्राम पंचायत में जाकर ई-श्रमकार्ड बनवाए जिससे उन्हीं शासन की योजनाओं का लाभ मिल सके।

नही रही छाजी देवी सैनी, अंतिम यात्रा आज

नीमच, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। अत्यंत दुख के साथ सूचित करने में आता है कि स्व मोतीलाल सैनी की धर्मपत्नी एवं मंगलचंद, बनवारी लाल, विनोद, हजारीलाल, हीरालाल सैनी की भाभी एवं कृष्ण, महेश की माताजी एवं जसवंत, कृष्ण कन्हैया, योगेश, कपिल, निर्मल की ताईजी एवं शिवम, जयश की दादीजी छाजी देवी सैनी का आज सोमवार दिनांक 02 सितम्बर 2024 को 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया हैं। जिनकी अंतिम यात्रा मंगलवार दिनांक 03 सितम्बर 2024 को सुबह 09 बजे निज निवास भोलाराम कंपाउंड, मूलचंद मार्ग नीमच से मुक्तिधाम के लिए निकलेगी।

बाछड़ा समुदाय का कोई भी छात्र-छात्रा स्कूल में प्रवेश से वंचित ना रहे-कलेक्टर

सभी विभाग बाछड़ा समुदाय के पात्र हितग्राहियों को स्वरोजगार एवं हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ दिलाए, बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं योजनाओं के तहत कलेक्टर ने अधिकारियों को बैठक में दिए निर्देश

नीमच, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। नीमच जिले में सभी विभागों के अधिकारी विभागीय स्वरोजगार योजनाओं और हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ बाछडा समुदाय के पात्र हितग्राहियों को दिलाना सुनिश्चित करें। जिले में बाछडा समुदाय का कोई भी छात्र-छात्रा स्कूलों में प्रवेश से वंचित ना रहे। शाला जाने योग्य सभी छात्रा-छात्राओं को 30 सितम्बर के पूर्व शालाओं में प्रवेश सुनिश्चित करें। यह निर्देश कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने सोमवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष नीमच में महिला एवं बाल विकास विभाग व्दारा बेटी

बचाओं, बेटी पढाओं योजना के तहत बाछड़ा समुदाय के उत्थावन के संबंध में आयोजित जिला अधिकारियों की बैठक में दिए गए।

बैठक में अतिरिक्तपुलिस अधीक्षक श्री नवलसिह सिसोदिया, अतिरिक्त सीईओ श्री अरविंद डामोर, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्री ताराचंद मेहरा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.दिनेश प्रसाद, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती रश्मी श्रीवास्तव, सभी परियोजना अधिकारी, कृषि, उद्यानिकी, उद्योग एवं अन्य विभागों के अधिकारी, एन.जी.ओ. के प्रतिनिधि श्री आकाश चौहान एवं श्री श्याम मालवीय भी उपस्थित थे। बैठक में कलेक्टर श्री चंद्रा ने जिले में बाछडा समुदाय के गांवों की संख्या, परिवारों की संख्या एवं जनसंख्या की जानकारी ली। महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्री मेहरा ने बाछडा बाहुल्य ग्रामों में विभाग व्दारा किए जा रहे कार्यो के बारे में विस्तार से बताया और विभिन्न विभागों से अपेक्षाओं से अवगत कराया। कलेक्टर श्री चंद्रा ने बाछडा बाहुल्य ग्रामों में इस समुदाय की महिलाओं को स्वसहायता समूह से जोडकर उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण दिलाने, ऋण एवं अनुदान योजनाओ का लाभ दिलाने के लिए विस्तृीत कार्य योजना तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश भी अतिरिक्त सीईओ को दिए। बैठक में एनजीओ के प्रतिनिधि श्री आकाश चौहान ने बाछडा समुदाय के बेटे, बेटियों को माता के नाम से जाति प्रमाण पत्र जारी करवाने की व्युवस्था करने तथा स्वरोजगार के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करवाने, ब्यूटी पार्लर, सिलाई प्रशिक्षण की व्यवस्था करने के सुझाव भी दिए।

दूसरी बार ढोल ग्यारस पर एक साथ निकलेंगे वेवाण

बालाजी ग्रुप के साथ समाज व वेवाण प्रमुखों की बैठक में लिया निर्णय

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। महावीर फतेह करे सेवा संस्था (बालाजी ग्रुप) की पहल पर विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी जलझूलनी एकादशी (डोल ग्यारस) 16 सितम्बर को विभिन्न समाजों एवं मंदिरों के वेवाण एक साथ निकाले जायेंगे। आयोजन को लेकर समाज प्रमुखों एवं वेवाण प्रमुखों की एक बैठक भावसार धर्मशाला खानपुरा पर सम्पन्न हुई।

बालाजी ग्रुप जिलाध्यक्ष लोकेन्द्र मंगल बैरागी ने कहा कि नगर में अलग-अलग समाजों द्वारा अपने-अपने मंदिरों से वेवाण निकाले जाते है। जिस कारण भक्त सभी वेवाण के पूजन व दर्शन नहीं कर पाते। इसी को लेकर गत वर्ष बालाजी ग्रुप की पहल पर मंदसौर में वेवाण का एक भव्य समारोह निकला था जिसकी सभी ने सराहना की थी। इस वर्ष भी बैठक में यह निर्णय लिया कि मंदसौर नगर में इस बार भी जलझूलनी एकादशी पर वेवाण एक साथ निकाले जायेंगे। इस हेतु विस्तृत कार्ययोजना आगामी बैठक दिनांक 5 सितम्बर को आयोजित की जाएगी। जिसमें आयोजन समिति का गठन भी किया जाएगा। बैठक में समाज व वेवाण प्रमुख दिलीप दुबे, विनय दुबेला, विनोद मेहता, गोपालदास पसारी, प्रहलाद पिंटू शर्मा, अशोक बघेरवाल, दिलीप राजोरिया, राकेश बैरागी, संदीप नामदेव, नवीन नामदेव, बाबू सूर्यवंशी, जीवन गौसर, नमन भाटिया, मयंक भाटिया, शेषनारायण माली, नंदराम माली, आनन्द भाटी, ललित भाटी, हरीश साल्वी, दिलीप शर्मा, मुकेश राठौर, ललित राठौर आदि उपस्थित रहे। अंत में आभार महेश भावसार ने आभार माना।

टेलर व्यवसायियों ने अपनी गुणवत्ता व फिटिंग के कारण अच्छा मुकाम हासिल किया-विधायक

मंदसौर टेलर एसोसिएशन का स्थापना दिवस व मिलन समारोह सम्पन्न

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। मंदसौर टेलर एसोसिएशन का 26 वां स्थापना दिवस व मिलन समारोह निवेध्यम गार्डन, कुमावत धर्मशाला के पास रामटेकरी रोड मंदसौर पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक विपिन जैन रहे।

इस अवसर पर विधायक श्री जैन ने कहा कि आधुनिकता एवं महंगाई के इस दौर में टेलरिंग का व्यवसाय कई समस्याओं से जूझ रहा है। रेडिमेड कपडों के बडे-बडे शो रूम एवं ऑनलाईन खरीददारी ने सिलाई के कार्य में लगे कारीगरो के सामने परेशानी खडी की है लेकिन फिर भी मंदसौर के टेलर व्यवसायी अपनी गुणवत्ता व फिटिंग के कारण अच्छा मुकाम हासिल किये हुय है। इस एसोसिऐशन के अपना रजिस्ट्रेशन करवाने सहित अन्य कही भी मदद की जरूरत पडेगी तो उसके लिये मैं उसके लिये सदैव तत्पर रहूंगा। एसोसिएशन के अध्यक्ष जगदीश गेहलोत ने बताया कि संस्था की स्थापना 1 सितम्बर 1999 को की गई थी। तब से एसोसिऐशन संस्था से जुडें सदस्यों व टेलरों के हित में कार्य कर रही है। आपने बताया मध्यप्रदेश में केवल मंदसौर में ही टेलर एसोसिऐशन द्वारा स्थापना दिवस एवं मिलन समारोह का आयोजन किया जाता हैं। प्रारंभ में अतिथि स्वागत समिति संस्थापक रामचंद्र कुरारिया, संरक्षक हुकुमचंद पंवार, परामर्शदाता नीलमचंद भावसार, पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र मकवाना, अध्यक्ष जगदीश गेहलोत, उपाध्यक्ष अमित चौहान, सचिव

चंद्रशेखर आसेरी, सह सचिव अयाज अली, कोषाध्यक्ष देवद्र खत्री, संगठन मंत्री जितेन्द्र खिंची, मिडिया प्रभरी रुपेश परमार आदि ने किया। इस अवसर पर बडी संख्या में एसोसिऐशन से जुडे सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएशन के अध्यक्ष जगदीश गेहलोत एवं पत्रकार ललित पटेल ने किया व आभार परामर्शदाता नीलमचंद भावसार ने माना। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी रुपेश बी. एम. परमार ने दी।

कांग्रेस के नेता और सोयाबीन का स्टॉक रखने वाले व्यापारी किसानों के नाम पर राजनीति करना बंद करें-राठौर

मनासा, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। राठौर का बडा बयान कांग्रेस बडे नेता एवं सोयाबीन का बडा स्टाक रखने वाले बडे व्यापारीयों को रहा है भारी नुकसान इसलिए किसानों के नाम पर 6000 प्रति क्विंटल की मांग कर रहे हैं यें आंदोलन किसानों का नहीं है यें आंदोलन व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस बडे नेताओं एवं बडे व्यापारियों का है नीमच जिले के किसानों को गुमराह किया जा रहा है कांग्रेस पार्टी द्वारा। भारतीय जनता पार्टी के युवा भाजपा नेता एवं नगर परिषद मनासा के पार्षद प्रतिनिधि दिनेश राठौर ने कांग्रेस के बडे नेताओं और सोयाबीन का बडा स्टॉक करने वाले व्यापारियों पर हमला बोलते हो बताएं कि यह आंदोलन केवल और केवल कांग्रेस नेताओं एवं बडे व्यापारियों का है इसलिए मैं किसानों को बदनाम किया जा रहा है इसमें कोई भी किसान शामिल नहीं है केवल और केवल किसानों के नाम पर राजनीति की जा रही है अभी नीमच मंदसौर संसदीय क्षेत्र सें कोई भी किसान खुल कर मैदान नहीं आया

है केवल और केवल कांग्रेस के बडे नेता और जिन व्यापारियों के पास 10000 सें 20000 सोयाबीन की बोरियों का स्टॉक पडा हुआ है जिन व्यापारियों ने अधिक भाव मेंसोयाबीन ले ली है और आज सोयाबीन का भाव कम पडने सें कांग्रेस के बडे नेताओं और बडे व्यापारियों को बहुत ही भारी नुकसान हो रहा है इसलिए लिये केवल और केवल किसानों के नाम पर झूठी वाई-वाई लूटने का काम किया जा रहा है और तो और कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस के नेता के किसानों को बदनाम करने का काम कर रहे हैं राठौर ने भी बताया की 2018 में भी किसान आंदोलन के नाम राजनीति कर चुकी हैं और कांग्रेस नेताओं के चहरे उजागर घर हुए हैं राठौर ने यें भी बताया है की नीमच और मंदसौर जिले के किसानों को आपके काम फुर्सत नहीं है केवल और केवल किसानों के नाम सें कांग्रेस पार्टी के बडे नेता और सोयाबीन का बड़ा स्टाक रखने वाले व्यापारी किसानों को गुमराह करने का काम कर रहे हैं।

फर्जी हस्ताक्षर करवाकर छिना निरक्षर महिला से मध्यान्ह भोजन का ठेका...!

पिपलियामंडी, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। गांव बरखेडापंथ में फर्जी हस्ताक्षर कर स्व. सहायता समूह से निरश्रर महिला को हटाने का मामला सामने आया। महिला ने शिकायत की, न्याय नही मिली तो सोमवार को भूख हडताल पर बैठ गई, बाद में अधिकारियों ने महिला को समझाइश दी व रसोईए के रुप में रखने का पंचनामा बनाया। जानकारी के अनुसार बरखेडापंथ में 2008 से उमाबाई पिता गोर्धन खारीवाल व भागवंतीबाई पति भागीरथ बलाई शासकीय प्राथमिक विद्यालय में मध्याह्न भोजन बनाने का कार्य कर रहे थे। दोनों महिलाओं ने मंदसौर कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ, मल्हारगढ एसडीएम व जनपद पंचायत सीईओ को शिकायत में बताया कि विद्यालय की प्रधानाध्यापक रेशमा ने कागज पर हस्ताक्षर करवाए कि आपका ठेका समाप्त हो रहा है, अब आपको 4 हजार रुपए प्रति माह मिलेंगे। बाद में पता चला कि प्रधानाध्यापक ने गांव के मनीष रत्नावत से मिलकर हमारा ठेका निरस्त करवाने के लिए हमारे हस्ताक्षर करवा लिए। महिलाओं ने बताया कि शिकायत के बाद भी न्याय नही मिला इसलिए भूख हडताल पर बैठना पडा। इधर भूख हडताल पर बैठी महिलाओं को समझाइशर देने बीआरसीसी शिशिर विजयवर्गीय, ग्राम पटवारी व पंचायत सचिव पहुंचे व पंचनामा बनाया कि उमाबाई को सीएमसी द्वारा रसोईए के रुप में रखा जाएगा। तब जाकर महिलाओं ने भूख हडताल समाप्त की।

अनंत चतुदर्शी पर निकलेगी झिलमिलाती झांकी

आयोजन को भव्यता देने हेतु समिति की बैठक सम्पन्न

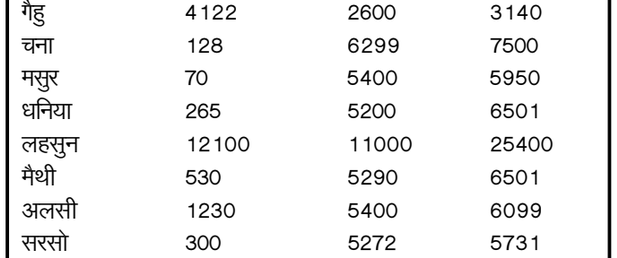

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरू एक्सप्रेस। श्रीराम गणेशोत्सव समिति रामटेकरी मित्र मंडल द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दस दिवसीय गणेशोत्सव परम्परागत एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। साथ ही अनंत चतुर्दशी के पावन पर्व पर 17 सितंबर को मंदसौर नगर में नयनाभिराम झिलमिलाती झांकी निकाली जाएगी। आयोजन को भव्यता प्रदान करने हेतु समिति की सभी सदस्यों की वृहद बैठक खुशनुमा माहौल में मनवार गार्डन -रेस्टोरेन्ट पर सम्पन्न हुई।

बैठक मे बताया कि गणपति विसर्जन के अवसर पर दसवें वर्ष मंदसौर नगर में भव्य झिलमिलाती, नयनाभिराम झांकी, उज्जैन के प्रसिद्ध नगाडे ताशे, अखाडो के हैरतअंगेज करतब के भव्य चल समारोह रामटेकरी रेवास देवडा रोड से प्रारम्भ होकर मुख्य चल समारोह में शामिल होगा। बैठक के प्रारम्भ में मंचासीन अतिथियों द्वारा भगवान श्रीराम दरबार के चित्र पर माल्यार्पण कर गणेश वंदना की। सभी सदस्यों ने उक्त आयोजन भव्य रूप से इस वर्ष भी करने के लिए अपनी अपनी स्वीकृति ऊँके उच्चारण के साथ प्रदान करी व सभी ने अपने अपने अमूल्य सुझाव प्रदान किये। समिति द्वारा पिछले वर्ष का आय व्यय का प्रस्तुतीकरण किया गया। समिति के सभी सदस्यों को समिति द्वारा स्मृति चिन्ह स्वरूप भगवान पशुपतिनाथ की लैमिनेटेड तस्वीर प्रदान की गयी। बैठक के अंत मे सभी सदस्यों ने सामूहिक भोजन प्रसादी ग्रहण की।

दिनांक 03 सितम्बर 2024

अपनी कुण्डली स्वयं देखे-

ज्योतिषाचार्य पंडित यशवंत जोशी के साथ

सुंदर तथा गुणवान पत्नी योग...

※ जन्मकुंडली के सप्तम भाव में शुभ होकर शुक्र स्थित हो-गुरु गृह की दृष्टिहो, सप्तमेश शुभ स्थिति में हो तथा अशुभ भावो के स्वामी या पाप ग्रह सप्तम भाव में स्थित न हो तो जातक की पत्नी बहुत हि सुन्दर, गुणवान, सचरित्रवान, तथा पति के प्रति ईमानदार रहने वाली होती है।

जय दुर्गा ज्योतिष सेवा संस्थान एवं अनुष्ठान केंद्र मंदसौर

7024667840,8085381720

पंजीयन क्र.डी.आर./एम.डी.एस.आर./12 दिनांक 08/12/1960

कर्मचारी गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्यादित, मन्दसौर (म.प्र.)

यश नगर, भगवान श्री खाटुश्याम मंदिर परिसर, मन्दसौर (म.प्र.)

क्रमांक/क्र.गृ.नि./ सा.सभा/2024 मंदसौर, दिनांक 31/08/2024

वार्षिक साधारण सभा का सूचना पत्र (केवल सदस्यों के लिए)

माननीय सदस्य महानुभाव, कर्मचारी गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्यादित मंदसौर की 63 वीं वार्षिक साधारण सभा दिनांक 14 सितम्बर 2024 शनिवार को प्रात: 10.30 बजे स्थान अग्रवाल धर्मशाला श्री पशुपतिनाथ महादेव मन्दिर परिसर मन्दसौर में निम्न विषय सूची अनुसार निर्णय लेने हेतु आयोजित की गई है। कृपया साधारण सभा में सम्मिलित होने का कष्ट करें। उक्त दिनांक को यदि नियत समय पर साधारण सभा के लिए गणपूर्ति नहीं होती है तो साधारण सभा की बैठक उसी दिन उसी स्थान पर निर्धारित समय के आधे घण्टे पश्चात् दोपहर 11.00 बजे से प्रारम्भ की जावेगी। जिसमें गणपूर्ति की आवश्यकता नहीं रहेगी।

:: विषय सूची ::

1. वार्षिक पत्रक वर्ष 2023-24 के वित्तीय पत्रकों की स्वीकृति देना। 2. आगामी वर्ष 2025-26 के प्रस्तावित आय-व्यय का अनुमानित बजट स्वीकृत करना। 3. म.प्र. सहकारी अधिनियम 1960 की धारा 58 के नवीन प्रावधान अनुसार वर्ष 2024-25 के अंकेक्षण हेतु संपरीक्षक की नियुक्ति पर विचार। 4. जिन मदों में अधिक व्यय हुआ है उनकी स्वीकृति एवं पुष्टि पर विचार। 5. संस्था के सदस्यों के आधार कार्ड की छायाप्रति व मोबाईल नंबर की जानकारी संस्था को देने बाबत। 6. दिनांक 30-03-24 को म.प्र. राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 की धारा (43) के अंतर्गत किये गये प्रावधान की स्वीकृति पर विचार। 7. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की अनुमति से प्रस्तुत करने व उनकी अनुमति के पश्चात् विचार कर कार्यवाही करना।

※※※※ संचालक मंडल की आज्ञा से ※※※※

संजय पाण्डे, लेखाकार्य | बलवंत राव मोरे, प्रबंधक | बलवंतसिंह कोठारी, अध्यक्ष

संचालक मंडल-नरेन्द्रसिंह चौहान, जयसिंह कोठारी, घनश्यामसिंह परमार, अशोक लश्करी, अनिल चौधरी, मनीष श्रीवास्तव, विरेन्द्रप्रसाद केवड़ा, श्रीमती ललिता भटनागर

※ समय का विशेष ध्यान रखे।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	17	2300	2680
उडद	1	5700	5700
सोयाबीन	4500	4000	4701
गैहु	4122	2600	3140
चना	128	6299	7500
मसुर	70	5400	5950
धनिया	265	5200	6501
लहसुन	12100	11000	25400
मैथी	530	5290	6501
अलसी	1230	5400	6099
सरसो	300	5272	5731
तारामीरा	3	4561	4561
इसबगोल	60	10202	12902
प्याज	1663	1321	3727
कलोंजी	6	7600	17980
डॉलर	18	10300	12500
तिल्ली	80	9900	11901
मटरसुखी	4	5626	7301
असालीया	48	10050	11041

सभी शासकीय कर्मचारी अनिवार्य रूप से हेलमेट लगाए-कलेक्टर

साप्ताहिक अंतर विभागीय समीक्षा बैठक संपन्न

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग की अध्यक्षता में साप्ताहिक अंतर विभागीय समीक्षा बैठक सुशासन भवन स्थित सभागृह में आयोजित की गई। बैठक के दौरान कलेक्टर श्रीमती गर्ग ने सभी अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि सभी अधिकारी, कर्मचारी हेलमेट पहनकर शासकीय कार्यालय में आए। अगर कोई बिना हेलमेट के वाहन चलाते पाया जाता है, तो उस पर चालानी कार्यवाही होगी। शासकीय उचित मूल्य की दुकानों पर राशन सही समय पर शत प्रतिशत वितरण हो। जिस माह का राशन हो वह उसी माह वितरण होना चाहिए। इसके साथ ही राशन दुकानों पर राशन आवंटन पर भी समय पर होना चाहिए। राशन वितरण के संबंध में विगत 6 माह की रिपोर्ट भेजें। जिन दुकानों पर राशन वितरण नहीं होता है, उस पर एसडीएम उचित कार्यवाही करें। स्वास्थ्य विभाग सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में निजी अस्पतालों से गूगल सीट पर जानकारी भरवाए। इसके साथ ही सुरक्षा गार्ड एवं स्टाफ के डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन की कार्यवाही तुरंत करें। सभी अस्पतालों में लाइट एवं सीसीटीवी कैमरे अनिवार्य रूप से लगवाए। पीडब्ल्यूडी विभाग स्कूल एवं आंगनबाडी के जर्जर भवनों के मरम्मत का कार्य जल्द पूर्ण करें। बैठक में सीईओ जिला पंचायत कुमार सत्यम, अपर कलेक्टर श्रीमती एकता जायसवाल, सभी जिलाधिकारी मौजूद थे।

जिले में अब तक 722.7 मिमी औसत वर्षा दर्ज

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिले में इस वर्ष अबतक औसतन 722.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गयी है। जबकि पिछले 24 घन्टों में मंदसौर जिले में 12.8 मिमी वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। पिछले 24 घन्टों में मंदसौर में 21.0 मि.मी., सीतामऊमें 7.2 मि.मी. सुवासरा में 0 मि.मी., गरोठ में 3.4 मि.मी., भानपुरा में 0 मि.मी., मल्हारगढ मे 36.0 मि.मी., धुधंडका में 19.0 मि.मी., शामगढ में 13.2 मि.मी., संजीत में 13.0 मि.मी., क्यामपुर में 6.0 मि.मी. एवं भावगढ में 22.0 मि.मी वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। विगत 1 जून से अबतक वर्षामापक केन्द्र मंदसौर में 589.0 मि.मी., सीतामऊमें 764.2 मि.मी. सुवासरा में 807.2 मि.मी., गरोठ में 734.7 मि.मी., भानपुरा में 662.0 मि.मी., मल्हारगढ मे 624.0 मि.मी., धुधंडका में 687.0 मि.मी., शामगढ में 1048.6 मि.मी., संजीत में 580.0 मि.मी., क्यामपुर में 668.6 मि.मी. एवं भावगढ में 784.7 वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। गांधीसागर बांध का जल स्तर अब तक 1304.83 फीट है।

मप्र में सात साल से खाली पड़ा महिला आयोग, पीड़िताओं को नहीं मिल रहा न्याय

भोपाल, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश में महिला अपराध के मामले बढते जा रहे हैं, लेकिन अपराध पीडित महिलाओं को न्याय नहीं मिल रहा है। इसका कारण यह है कि राज्य महिला आयोग की बेंच सात साल से नहीं लगी है, क्योंकि आयोग में ना तो अध्यक्ष और ना ही सदस्य हैं।इस कारण प्रदेश भर की पीडित महिलाएं न्याय के लिए दर-दर भटक रही हैं।

अब तक राज्य महिला आयोग में करीब 24 हजार मामले लंबित हैं, जबकि आयोग के नियमानुसार किसी भी शिकायत पर 15 दिन के अंदर कार्रवाई करनी होती है। आयोग में 2018 के बाद बेंच ही नहीं लगी है। इस कारण आयोग में पीडित महिलाओं के मामले बढ रहे हैं। आयोग में करीब 3500 महिलाएं हर साल महिला आयोग में शिकायत दर्ज करवाने पहुंचती हैं। दरअसल, 2018 में आयोग की अध्यक्ष लता वानखेडे का कार्यकाल खत्म होने के बाद 2019 में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार ने 18 मार्च 2020 आयोग की अध्यक्ष शोभा ओझा को बनाया गया और सदस्यों की भी नियुक्ति की गई थी, लेकिन उसके बाद फिर से भाजपा की सरकार आई और नियुक्तियों का मामला कोर्ट पहुंच गया।इस दौरान एक भी दिन बेंच नहीं लगी। इसके बाद से दुबारा भाजपा की सरकार 2022 में बनने के बाद महिला आयोग में अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति नहीं हो पाई है।इस कारण हिंसा पीडित महिलाओं को न्याय नहीं मिल पा रहा है। आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मई में मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव को पत्र लिखा था।

हर दिन नौ से 10 महिलाएं शिकायत दर्ज कराती है-महिला आयोग में प्रदेश भर से हर रोज नौ से 10 महिलाएं शिकायत दर्ज हो रही है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं होने के कारण महिलाएं निराश होकर लौट रही हैं। अब तो महिलाओं को वहां जाने पर महिला थाना या जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में काउंसलिंग के लिए भेजा जा रहा है।

मुख्यमंत्री आज मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ पार्टी की सदस्यता ग्रहण करेंगे

भोपाल, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि मध्यप्रदेश में संगठन पर्व का शुभारंभ 3 सितम्बर को दोपहर 1 बजे भाजपा प्रदेश कार्यालय में होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों के साथ भाजपा प्रदेश कार्यालय में पार्टी की सदस्यता ग्रहण करेंगे। श्री शर्मा ने कहा कि प्रदेश के 41 लाख कार्यकर्ता 64871 बूथों पर संगठन पर्व के तहत लोगों को सदस्यता दिलाएंगे। 25 सितंबर तक चलने वाले संगठन पर्व के दौरान मध्यप्रदेश में डेढ करोड नए और देशभर में 10 करोड सदस्य बनाए जाएंगे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने प्रदेश के भाजपा कार्यकर्ताओं सहित प्रदेश के लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकात्मता और लोकतंत्र के गांधीवादी दृष्टिकोण को मजबूती प्रदान करने के लिए भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण करें और भारत की विकास यात्रा में सभी लोग शामिल हों। उन्होंने कहा कि भाजपा चुनावों तक सीमित रहने वाली पार्टी नहीं, कार्यकर्ता आधारित जीवंत संगठन है। संगठन पर्व सर्वव्यापी-सर्वस्पर्शी होगा, जिसमें समाज के सभी वर्गों के लोगों को पार्टी में शामिल कर सदस्य बनाया जाएगा।

प्रगतिशील रेडियोग्राफर संघ की बैठक संपन्न

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। प्रगतिशील रेडियोग्राफर संघ मध्य प्रदेश के बैनर तले मंदसौर मुख्यालय पर जिला शाखा जिला स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे संघ पदाधिकारियों द्वारा नवागत सदस्यों का स्वागत सम्मान किया गया तथा मंदसौर जिले के संघ की मुख्य मांगों पर विचार विमर्श किया एवम् मन्दसौर जिला कार्यकारिणी का विस्तार किया गया। इस अवसर पर जिला सलाहकार श्री रनसिंह तोमर, जिला अध्यक्ष मोहन लाल धनगर के मार्गदर्शन में सर्वसम्मति से कार्यकारणी का विस्तार किया गया एवं नवीन कार्यकारिणी मे सर्वसम्मति से श्री विवेक तुगनावात को जिला उपाध्यक्ष व श्रीपाल सिंह देवडा को सह कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। संघ की बैठक में मुख्य मांगों के संदर्भ में विस्तार से विचार विमर्श किया गया, इसके अंतर्गत जिला की विभिन्न संस्थाओं में विकिरण सुरक्षा से सम्बंधित मुद्दों पर चर्चा हुई जैसे - एक्स रे मशीनों का लाइसेंस अनिवार्य रूप से किया जाना, एक्स रे रूम शासन की गाइड लाइन अनुसार होना , सुरक्षा साधन उपलब्ध होना, टीएलडी बेज उपलब्ध करवाना, मरीजों, परिजनों, कर्मचारियों के लिए लेड अप्रोन, लेड पार्टिशन, लेड शीट, थायराइड शील्ड, गोनेड शील्ड, लेड ग्लोव्स, लेड चश्मा आदि अति आवश्यक सामग्री अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवाने आदि विषयों तथा भविष्य में संघ द्वारा दिया जाने वाला ज्ञापन के मांग सम्बन्धी बिंदुओं पर चर्चा की गई। इसी कडी में संघ के समस्त पदाधिकारियों ने सुन्दरलाल पटवा शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय मन्दसौर मे पौधे लगाये उसके बाद शरणम रेस्टोरेंट में संघ की बैठक संपन्न हुई, नवनियुक्त रेडियोग्राफर को सदस्यता दी। आज के कार्यक्रम में विशेष रूप से जिला सलाहकार श्री रन सिंह जी तोमर , जिला अध्यक्ष मोहनलाल धनगर, जिला उपाध्यक्ष विवेक तुगनावत, जिला सचिव सुनील सोनी, जिला कोषाध्यक्ष श्री कृष्णकांत भावसार, सह कोषाध्यक्ष श्री पाल सिंह देवडा, सह मीडिया प्रभारी श्री राहुल चौहान, सह सचिव श्री धनजय शाक्य, जिला सदस्य प्रदीप मालवीय, श्रीमति रितु साहू, श्री अजय गंगवाल, श्री अंकित पाटीदार, श्री दीपक मालवीय, श्री सुरज सांकला उपस्थित हुए तथा कार्यक्रम में संघ द्वारा सभी का आत्मीय अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन जिला कोषाध्यक्ष श्री कृष्णकांत भावसार द्वारा तथा आभार जिला उपाध्यक्ष श्री विवेक तुगनावात द्वारा माना गया। उक्त जानकारी श्री मोहनलाल धनगर, जिला अध्यक्ष, जिला मंदसौर द्वारा दी गई।

विद्यार्थियों के दल का शैक्षणिक भ्रमण कल

नीमच, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग भोपाल द्वारा जारी निर्देशानुसार उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में अपने विरासत संबंधी सांस्कृतिक चेतना विकसित करने विज्ञान का लोग व्यापीकरण एवं साइंस टूरिज्म को बढावा देने हेतु स्वामी विवेकांनद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नीमच व जिले के अन्य 5 शासकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों का दल उज्जैन के लिए 4 सितम्बर 2024 बुधवार को रवाना होगा।

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय जनभागीदारी अध्यक्ष विश्व देव शर्मा के मार्गदर्शन में प्राचार्य डॉ के. एल. जाट जो अग्रणी महाविद्यालय जिले के नोडल अधिकारी भी हैं व शैक्षणिक भ्रमण प्रभारी डॉ. अर्चना पंचोली ने बताया कि भ्रमण यात्रा सुनियोजित ढंग से महाविद्यालय परिसर से निजी बस के माध्यम से प्रात: 6. 30 बजे रवाना होगी जो प्रात: 11 बजे उज्जैन इसके पूर्व भ्रमण में जाने वाले समस्त विद्यार्थियों से उनके अभिभावकों द्वारा भरवाए गए स्वीकृति पत्र लिए, साथ ही आवश्यक निर्देश दिए। यात्रा को निर्देशित करते हुए, भ्रमण प्रभारी डॉ. अर्चना पंचोली ने कहा कि इस प्रकार के भ्रमण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक होते हैं। शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण कडी है। जब विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण पर जाते हैं तो वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में देखकर किसी भी विषयवस्तु का वर्णन करने में सक्षम हो जाते हैं। शैक्षणिक भ्रमण के अंतर्गत विद्यार्थियों को तारामंडल, सर्प उद्यान, साइंस सिटी, जंतर-मंतर, त्रिवेणी संग्रहालय, महाँकाल लोक, विक्रम नगर, उद्योगपुरी आदि स्थानों का भ्रमण कराया जाएगा। विद्यार्थियों के दल के साथ शैक्षणिक भ्रमण प्रभारी डॉ. अर्चना पंचोली, डॉ कोमल चौधरी, डॉ अशोक प्रजापत भी विद्यार्थियों के साथ रवाना होंगे।

किसानों की समस्याओं को लेकर कांग्रेस का धरना प्रदर्शन कल

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी जी के निर्देशानुसार, जिला कांग्रेस की प्रभारी श्रीमती डॉ अर्चना जायसवाल जी ,जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं मन्दसौर विधायक श्री विपिन जैन जी,एवं पुर्व विधायको के मार्गदर्शन एवं उपस्थिति में मंदसौर ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस ,मंदसौर शहर ब्लॉक कांग्रेस व दलोदा ब्लॉक कांग्रेस के तत्वाधान में सोयाबीन के भाव बढानें, किसानों की आर्थिक परेशानी, बिजली की दरों में बेतहाशा वृद्धि, खस्ताहाल सड के, महिलाओं ,बालिकाओं के साथ दुराचार, अजा, अजजा, अल्पसंख्यक वर्गों पर अत्याचार, आदि मुद्दों को लेकर दिनांक 4 सितम्बर को प्रात: 11:30 बजे गांधी चौराहा, मंदसौर पर धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। अत: मंदसौर ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस, मंदसौर शहर ब्लॉक कांग्रेस, दलोदा ब्लॉक कांग्रेस के अंतर्गत आने वाले सभी जिला कांग्रेस कमेटी के समस्त पदाधिकारी, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के सदस्य गण, सेवादल, युवक कांग्रेस, महिला कांग्रेस, एन.एस.यू.आई, किसान कांग्रेस, जिला कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग एवं सभी प्रकोष्ठों के पदाधिकारी गण ,जिला पंचायत सदस्यगण, जनपद पंचायत सदस्यगण, सरपंचगण, समस्त पार्षद गण, पूर्व पार्षद गण, समस्त मंडलम, सेक्टर के पदाधिकारी गण समस्त बीएलए, नगर अध्यक्षगण एवं कांग्रेस पार्टी के समस्त जांबाज कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि धरना प्रदर्शन में सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनावें।

शिवसेना बैठक सम्पन्न

पिपलियामंडी, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिला महिला शिवसेना (यूबीटी) की बैठक गांव जेतपुरा में सम्पन्न हुई। जिसमें सर्वानुमति से मल्हारगढ तहसील उप प्रमुख पद पर सुनीता नायक को नियुक्त किया। नियुक्ति पत्र जिलाध्यक्ष श्यामबाई नायक, मीडिया प्रभारी शुभमसिंह कच्छावा, जिला प्रमुख विकास सूर्यवंशीकी उपस्थिति में सौंपा गया। इस अवसर पर सुनीता, कलाबाई, मंजू, गुड्डी, रामकन्या, कल्लू, आशा, शुगना, संतरा, ललिता, राधा, मंजू, कविता, चन्द्रकला, ललिता, अक्षरा, पूजा, रवीना, तेजल, पायल, किरण, आरती, शांति, राजू, मधु, पदमा, टीनू, सोहन आदि महिलाओं के साथ रमेशचन्द, तेजपाल, राधेश्याम, मदनलाल आदि शिव सैनिक भी उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय जनसुनवाई आज

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। अपर कलेक्टर श्रीमती एकता जायसवाल द्वारा बताया गया कि 3 सितंबर 2024 मंगलवार को आयोजित होने वाली जिला स्तरीय जनसुनवाई सीतामऊस्थित एसडीएम कार्यालय में सुबह 11 बजे आयोजित होगी। जिला मुख्यालय पर होने वाली जनसुनवाई यथावत चलेगी।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के लंबित प्रकरणों का तत्काल निराकरण करें-चंद्रा

नीमच, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने सोमवार को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की जिला स्तर पर प्रगति के संबंध में कलेक्टोरेट सभाकक्ष में समीक्षा बैठक ली गई। बैठक में प्रबंधक उद्योग केंद्र सुश्री चंचल अग्रवाल ने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना अंतर्गत जिला स्तर पर अब तक की गई कार्यवाही व प्रगति की जानकारी दी। कलेक्टर श्री चंद्रा ने ग्राम पंचायत स्तर पर लंबित प्रकरणों के त्वरित निराकरण के निर्देश ए.सी.ई.ओ. श्री अरविंद डामोर को दिए। साथ ही शहरी स्थानीय निकाय स्तर पर लंबित प्रकरणों के त्वरित निराकरण हेतु पी.ओ. डूडा को निर्देशित किया।

नपा के द्वारा किया जा रहा है दर्वाइयों का छिड़काव

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर के निर्देश पर नपा की स्वास्थ्य शाखा के द्वारा प्रतिदिन नगर के विभिन्न वार्डों में मच्छरों की रोकथाम हेतु दवाई तथा गाज घास की रोकथाम हेतु भी दवाई का छिडकाव किया जा रहा है। विगत दिनों नपा के द्वारा वार्ड नं. 1, 11 एवं 39 में दवाई का छिडकाव किया गया। नपा के द्वारा दवाई के छिडकाव से गाजर घास का उन्मूलन एवं मच्छरों के रोकथाम में मदद मिल रही है। क्षेत्रीय पार्षद नपा उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता चावला, पूर्व नपाध्यक्ष राम कोटवानी, जिला योजना समिति सदस्य श्रीमती भारती पाटीदार के द्वारा बताये गये स्थानों पर यह छिडकाव किया गया। आगामी समय में और भी वार्डों में दवाईयों का छिडकाव किया जाएगा।

यातायात जागरूकता पखवाड़ा के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को नियमों के प्रति किया जागरूक

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। म0प्र0 शासन के निर्देशानुसार 01 सितंबर से 15 सितंबर 2024 तक संपूर्ण प्रदेश में सडक सुरक्षा पखवाडा का आयोजन किया जा रहा है। उक्त पखवाडे के अंतर्गत जिला मंदसौर में भी मंदसौर पुलिस के थाना यातायात द्वारा विभिन्न् आयोजन किये जा रहे है। इसी क्रम में कलेक्टर मंदसौर तथा पुलिस अधीक्षक मंदसौर के निर्देशन में यातायात जागरूकता हेतु विभिन्न प्रकार के आयोजन किये गये है। जिसमें आज दिनांक 02.09.24 को जिले में मंदसौर पुलिस के थाना यातायात द्वारा यातायात जागरूकता हेतु हेलमेट वाहन रैली का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमान जिला कलेक्टर महोदया श्रीमती अदिती गर्ग, श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री अभिषेक आनंद, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री गौतम सोलंकी, पीडब्लूडी एवं जिला आरटीओ अधिकारी पूजा मुकाती, अन्य प्रशासनिक अधिकारियों समेत थाना शहर कोतवाली, वाय.डी. नगर एवं नई आबादी के थाना प्रभारीगण तथा यातायात प्रभारी मय स्टॉफ व एन.सी.सी. व अन्य छात्र शामिल रहे। उक्त जागरूकता रैली गांधी चौराहा से प्रारंभ होकर बीपीएल चौराहा, गुप्ता कचौरी, एमपी बस स्टैंड होते हुये शासकीय पीजी कॉलेज ग्राउंड पर समापन हुआ।

इसके अतिरिक्त सडक सुरक्षा पखवाडा का आयोजन के अंतर्गत रिलायंस पेट्रोल पंप के सामने यातायात स्टॉफ, खनीज स्टॉफ व जिला परिवहन अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से सघन वाहन चैकिंग की गयी। चैकिंग के दौरान स्कूली वाहनों एवं अन्य सभी वाहनों की चैकिंग की गयी तथा जिन वाहनों में कमी पायी गयी उनके विरूद्ध नियमानुसार मोटर व्हीकल एक्ट के तहत चालानी कार्यवाही की जाकर कुल 17 चालान बनाये जाकर 13000/- रूपये समन शुल्क राशी प्राप्त की गयी। सडक सुरक्षा पखवाडा का आयोजन के अंतर्गत ई-रिक्शा वाहन चालकों की बैठक थाना यातायात मन्दसौर पर रखी गयी जिसमें ई-रिक्शा चालकों को यातायात के नियमों की जानकारी आरटीओ अधिकारी सुश्री पूजा मुकाती द्वारा प्रदाय की गयी। सडक सुरक्षा पखवाडा का आयोजन के अंतर्गत थाना यातायात मन्दसौर पर चालकों के नैत्र चिकित्सा परिक्षण का भी आयोजन किया गया जिसमें जिला चिकित्सालय मन्दसौर से आयी टीम के द्वारा वाहन चालकों के नेत्रों का परिक्षण किया गया। सडक सुरक्षा पखवाडा का आयोजन के अंतर्गत दशपुर विद्यालय मन्दसौर में छात्र/छात्राओं को यातायात के नियमों के संबंध में जानकारी दी जाकर यातायात के नियमों के पालन करने हेतु जागरूक किया गया। सडक सुरक्षा पखवाडा के आयोजन के अंतर्गत नगरपालिका अमले, यातायात स्टॉफ, खनिज विभाग व आर.टी.ओ. की संयुक्त टीम द्वारा शहर के सभी मार्गों पर अस्थायी अतिक्रमण हटाया गया एवं बीपीएल चौराहा एवं गुप्ता चौराहा से लेकर बंटी चौराहा तक दुकानों के बाहर अस्थायी अतिक्रमण हटाया गया एवं सडक पर खडे वाहनों के विरूद्ध चालानी कार्यवाही को अंजाम दिया गया। सडक सुरक्षा पखवाडा के दौरान आगामी दिनों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जावेगा।

मंदसौर की नवाचारी शिक्षिका ... पेज 1 से जारी

2019 में श्रीमती कीर्ति सक्सेना शैक्षिक संगोष्ठी में जिला और संभाग स्तर से चयनित होकर राज्य स्तर पर राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। उनके मार्गदर्शन में विद्यालय के छात्रों ने जैव विविधता राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भी राज्य स्तर पर सहभागिता की है। श्रीमती कीर्ति सक्सेना को इस बात का आत्म संतोष होता है कि उनके प्रयासों से समाज के अत्यंत गरीब और श्रमिक वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में सुधार होता है और वे उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ते है।

कार्यालय वनमण्डलाधिकारी

सामान्य वनमण्डल मंदसौर, मध्यप्रदेश

Phone-07422-255519 (O) E-mail-dfotmsour@mp.gov.in

* जाहिर सूचना *

यह सूचित किया जाता है कि प्रधान मुख्य वन संरक्षक (संरक्षण) म.प्र. भोपाल के प.क्र./विविध/2024/2960-61 दिनांक- 09.08.2024 से दिये गये निर्देशानुसार इस वनमण्डल के वन परिक्षेत्र गरोठ अंतर्गत श्री मांगीलाल पिता उंकारलालजी सुतार निवासी बस स्टेण्ड के पास मुन्डला तहसील शामगढ़ जिला मंदसौर आरामशीन धारक की मृत्यु हो जाने से आरामशीन का नामांतरण उनके पौत्र श्री जगदीश पिता राधेश्याम जाति लोहार (सुतार) निवासी बस स्टेण्ड के पास मुन्डला, तहसील शामगढ़, जिला मंदसौर के नाम आरा मशीन नामांतरण किया जाना है, जिसमें उनके परिवार के सदस्य को इस पर कोई आपत्ति हो तो जाहिर सूचना के 15 दिवस के अंदर इस कार्यालय को अवगत करावें। समयावधि के पश्चात आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

(संजय रायखेरे)
भा.व.से.
वनमण्डलाधिकारी
सामान्य वनमण्डल मंदसौर

प्रशासन ने रात 3 बजे जाकर तोड़ी घर की दीवार

किसान नेता जोकचन्द के साथ नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंच किया विरोध प्रदर्शन

मंदसौर, 2 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। गांव बोरखेडी जागीर में पंचायत चुनाव की द्वेषता के चलते किसान के घर की दिवार तोडने के विरोध में किसान नेता श्यामलाल जोकचन्द्र के साथ सैकडों किसानों के साथ बंजारा समाज ने कलेक्ट्रेट पहुंच प्रदर्शन किया। इससे पूर्व कृषि मंडी मंडी मंदसौर के यहां एकत्रित होकर नारेबाजी के साथ कलेक्टर कार्यालय तक रैली निकाली। करीब आधे घंटे तक किसान नारेबाजी करते रहे। बाद में एक ज्ञापन कलेक्टर के नाम अपर कलेक्टर को सौंपा, जिसमें बताया बताया कि ग्राम बोरखेडी जागिर के सरपंच ने झूंठी शिकायत कर गांव के जगदीश पिता मांगीलाल बंजारा के घर की दिवार अतिक्रमण बताकर तोड दी। इससे शौचालय व पानी के टेंक भी टूट गए। यह कार्रवाई रात 3 बजे एसडीएम, तहसीलदार, जनपद सीईओ व पुलिस बल की मौजूदगी में हुई, चार बुलडोजर से दिवार गिराई गई। ज्ञापन में बताया कि यह दिवार किसान ने स्वयं की पैतृक जमीन पर बनाई थी, उसके बावजूद इसे तोडकर किसान को परेशान किया गया। किसान की दिवार यह कहकर तोडा गया कि उक्त स्थान पर सार्वजनिक कुईया थी, जबकि कुईया 50 वर्ष पूर्व जगदीश पिता मांगीलाल बंजारा ने खुदवाई थी, जिसका सार्वजनिक उपयोग हो रहा था, और बीस वर्ष पूर्व उक्त कुईया बंद हो गई थी, किसान 15 दिन पूर्व ही इस पर दिवार का निर्माण कराया था।

लगातार किसानों व गरीबों पर हो रहे अत्याचार:- किसान नेता श्यामलाल जोकचन्द ने आरोप लगाया कि संसदीय क्षेत्र में लगातार किसानों, गरीबों, मजदूरों व अंतिम पंक्ति में बैठे व्यक्ति पर अत्याचार हो रहे है। सत्तारुढ पार्टी के जनप्रतिनिधियों व नेताओं के इशारे पर प्रशासन लगातार इन वर्ग पर अन्याय, अत्याचार कर रहा है, जबकि गुंडे, बदमाश, हिस्ट्रीशीटर अधिकारियों व नेताओं की गाडियों में नजर आते है व उन्हें मालाएं पहनाकर फोटो सोशल मीडिया पर डालकर अपने कारनामों पर पर्दा डालते है। प्रशासन इनके खिलाफ कार्रवाई करने की हिम्मत नही जुटा पाता है। एसे में प्रशासन से आमजन न्याय की उम्मीद कैसे करें ? जोकचन्द ने कहा कि प्रशासन कोर्ट के आदेश की भी अव्हेलना कर रहा है। बंजारा समाज के नेता सागर कछावा ने चेतावनी दी कि पीडित परिवार को न्याय नही मिलता है तो 7 दिनों बाद कलेक्टर कार्यालय का घेराव करेंगे, जब तक न्याय नही मिल जाता तब तक लडाई को जारी रखेंगें।

चुनाव लडा, इसलिए निकाली द्वेषता- ज्ञापन में यह आरोप लगाया कि जगदीश ने इस बार सरपंच का चुनाव भी लडा था, इसी द्वेषता के चलते सरपंच ने झूंठी शिकायत कर दिवार को तुडवाकर नुकसान कराया। अपर कलेक्टर ने आश्वासन दिया कि 7 दिन के भीतर मामले की जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे। इस अवसर पर कृषि उपज मंडी के पूर्व उपाध्यक्ष कमलेश पटेल, बंजारा समाज के नेता सागर कछावा, भारतसिंह खिंची, वकील बंजारा, झारडा के पूर्व सरपंच दिनेश गुप्ता, सुरेश सूर्यवंशी सहित बडी संख्या में किसान व बंजारा समाज के लोग उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक- आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in